संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : 1 अप्रैल २०२1
वर्ष : ३० अंक : 1० (निरंतर अंक : ३४०)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

जिस परमात्म-सुख के आगे इन्द्र का राज्य भी तुच्छ ता है ऐसा एकांत समाधि का सुख छोड़कर संत समाज में न हमारा उत्थान करने आये हैं। अवतरण दिवस पर कुछ हे तो ऐसे साधन का कोई संकल्प कर लो जिससे तुम्हारी यात्मिकता में ऊँचाई आ जाती हो। - पूज्य बापूजी



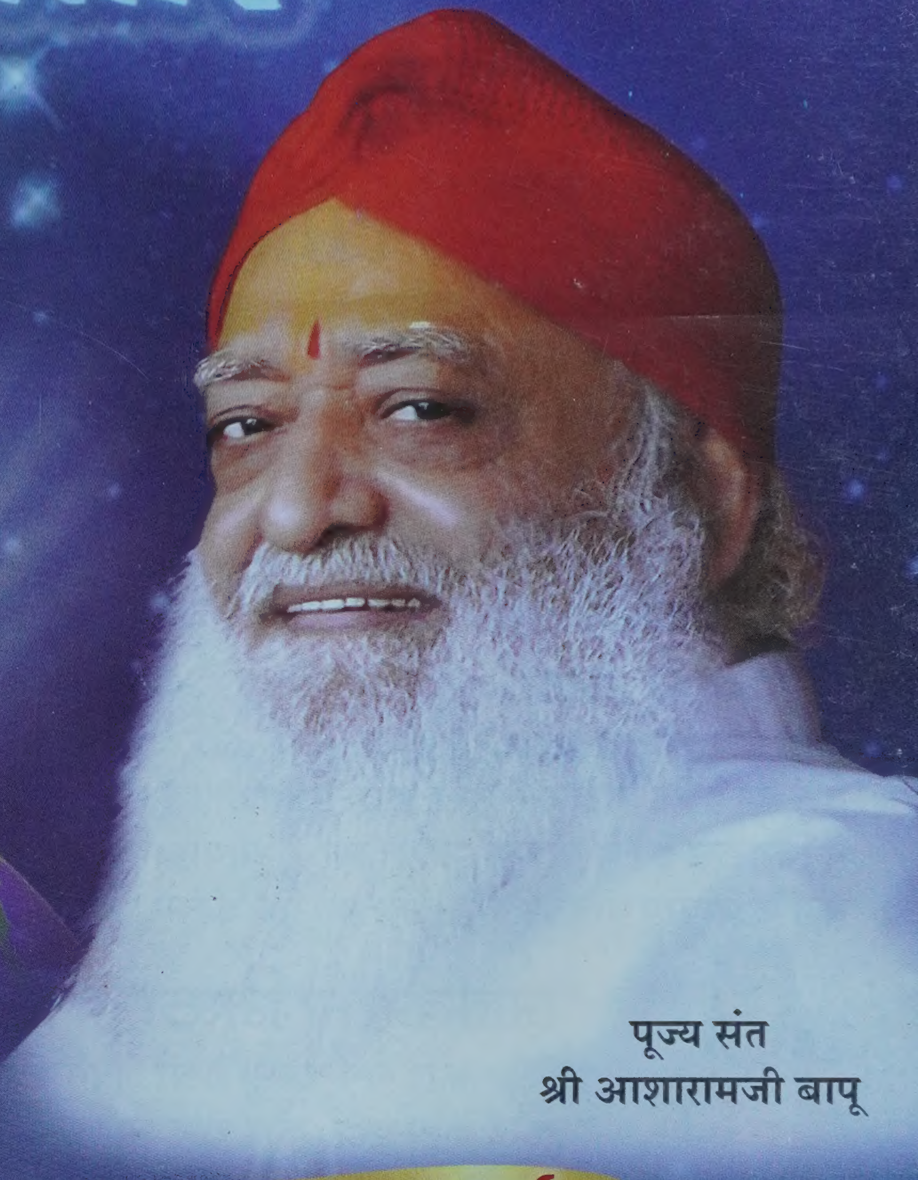
वमी : २१ अप्रैल





ऐसी सेवा स्वामी को वश में कर देती है

श्री हनुमान जयंती : २७ अप्रैल १६



पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

पूज्य बापूजी का अवतरण दिवस : २ मई

पूज्य बापूजी का जीवन मानो धरती पर अवतरित कर्मयोग है, भक्ति व ज्ञान योग है। साथ ही यह खकातरता, सहानुभूति, प्रेम, सांत्वना का ऐसा महान आदर्श है जिसकी कोई मिसाल नहीं है। कुछ झलकें...



र कुम्भ में संतों की माँग : 'बापूजी को जल्द-से-जल्द रिहा किया जाय !' ९



१००८ महामंडलेश्वर स्वामी विश्वेश्वरानंद ी महाराज, महानिर्वाणी अखाड़ा : वासियों ने यही समझकर सरकार को या कि कम-से-कम अब तो हिन्दुओं को न्याय तो ा - इस बात पर सरकार को गौर करना चाहिए।



महंत परमेश्वरदासजी, महामंत्री, भारत साधु समाज, दक्षिण गुजरात : द्वारकावाले स्वामी केशवानंदजी को चारित्रिक आरोप में निचली त ने दोषी करार दिया था लेकिन वे निर्दोष थे, ७ वर्ष बाद रिहा हुए। ऐसे ही हमारे आशारामजी बापू निर्दोष हैं और उन्हें रिहा किया जाय।



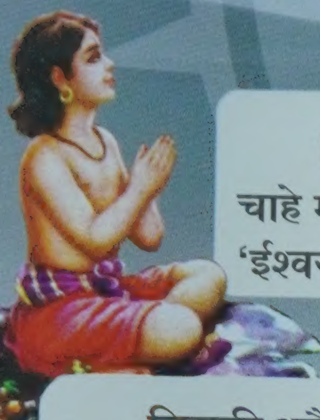
महामंडलेश्वर श्री १०८ स्वामी महेश्वरानंद पुरीजी महाराज : संत आशारामजी के ऊपर यह तो खुला षड्यंत्र है।



महंत श्री बर्फानी बाबा, पंचायती अटल अखाड़ा, जूनागढ़ : जब तक आशारामजी बापू का मान-सम्मान रखा गया तब तक हमारे देश में इतनी आफत नहीं आयी, जितनी अभी चल रही है।

अपनी निष्ठा पक्की करनी चाहिए !

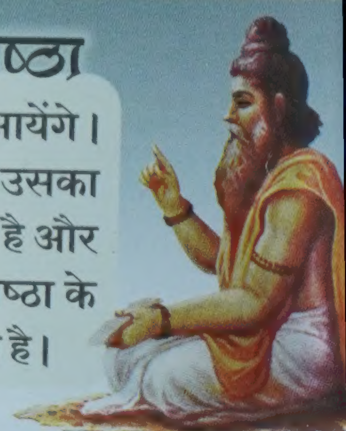
जो भी निष्ठा होती है उसकी अपनी
अपनी एक प्रक्रिया होती है । उसमें
साधन, स्थिति और फल क्या होता है
यह सब बिल्कुल पक्का होता है ।



भगवद्भक्त की निष्ठा

जिसके हृदय में ईश्वर-भक्ति है उसका बल है ईश्वर-विश्वास । चाहे रोग आये, चाहे शोक आ
चाहे मोह, लोभ या विरोध आयें, चाहे मृत्यु आये... हर हालत में उसका विश्वास बना रहना चाहिए
'ईश्वर हमारी रक्षा करेगा ।' सम्पूर्ण विपत्तियों को सहन करने के लिए ईश्वर पर विश्वास आत्मबल देता

अद्वैतवादी की निष्ठा



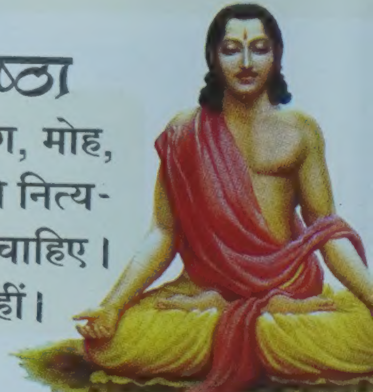
जिसकी अद्वैतनिष्ठा है उसके जीवन में भी रोग आयेगा, शोक और मोह के अवसर आयेंगे । कभी पाँव फिसल भी जायेगा और कभी ठीक आगे भी बढ़ेगा, कभी मृत्यु आयेगी । ऐसे में उसका बल यह है कि 'मैं नित्य-शुद्ध-बुद्ध-मुक्त ब्रह्म हूँ । इन परिस्थितियों से मेरा न तो कुछ बनता है और न बिगड़ता है । ये तो मृग-मरीचिका हैं, मायामात्र हैं, अपने स्वरूप में कुछ नहीं हैं ।' इस निष्ठा के बल के सिवाय यदि वह यह कहने लगे कि 'ईश्वर ! हमको बचाओ ।' तो उसकी निष्ठा कच्ची है ।



जापक की निष्ठा

कोई जप करता है तो अपने मंत्र पर उसका विश्वास है कि 'मंत्र हमारी रक्षा करेगा ।' पर
कोई काम पड़ा, कोई रोग आया, कोई समस्या आयी अथवा मृत्यु का अवसर आया और वह
अपना मंत्र छोड़कर भागा दूसरे मंत्र की शरण में तो वह अपनी निष्ठा से च्युत हो गया । बल
हमेशा अपनी निष्ठा का होना चाहिए ।

योगी की निष्ठा



एक योगी, जो समाधि लगाने का अभ्यास करता है और उसके जीवन में कोई रोग, मोह, शोक का प्रसंग आता है तो वह यदि कहता है कि 'हे ईश्वर ! बचाओ !' अथवा 'आत्मा तो नित्य-शुद्ध-बुद्ध-मुक्त है ।' तो उसकी निष्ठा पक्की नहीं । उसको तो तुरंत अंतर्मुख हो जाना चाहिए । ऐसी शक्ति उसके अंदर होनी चाहिए कि तुरंत चित्त-वृत्ति का निरोध हो जाय - कहीं कुछ नहीं ।



ब्रह्मज्ञानी महापुरुष की निष्ठा

ब्रह्मज्ञानी महापुरुष के जीवन में जो कठिनाई आती है, उसको वे मंत्रजप करके, देवता के बल पर अथवा ईश्वर की प्रार्थना करके पार नहीं करते । वे जानते हैं कि 'अपने सच्चिदानंद स्वरूप में यह सब स्फुरणा-मात्र है । इसकी कोई कीमत ही नहीं है ।'

गुरुभक्तों की निष्ठा



गुरुभक्तों के लिए सद्गुरु से बढ़कर और कोई नहीं है । भगवान शिवजी कहते हैं : 'गुरु ही देव हैं, गुरु ही धर्म हैं, गुरु में निष्ठा ही परम तप है । गुरु से अधिक और कुछ नहीं है यह मैं तीन बार कहता हूँ ।' (श्री गुरुगीता : १५२)

तब तक अपनी निष्ठा को पक्का नहीं समझना जब तक अपनी निष्ठा के अतिरिक्त और किसीका सहारा लेना पड़ता हो । अपने घर में जो बैठने का अभ्यास है, वह साधक की सिद्धि का लक्षण है और जो पराये घर में बैठकर आँधी-तूफान से बचते हैं, उनकी निष्ठा पक्की नहीं है । अपनी निष्ठा पक्की करनी चाहिए ।

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : ३० अंक : १० मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३४०
प्रकाशन दिनांक : १ अप्रैल २०२१
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
चैत्र-वैशाख वि.सं. २०७७-७८

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। **अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैन्युफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactureres) के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।**

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ६१२१०८८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ६१२१०७४२
७९६१२१०७१४ 'Rishi Prasad'
ashramindia@ashram.org
www.ashram.org www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी
वार्षिक	₹ ६५	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १२०	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २५०	₹ ३२५
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६००	---

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ६००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ १२००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ ३०००	US $ 80

इस अंक में...

यह कर लो तो सारी परेशानियाँ भाग जायेंगी !

- पूज्य बापूजी

एक होती है सत्-वस्तु, दूसरी होती है मिथ्या वस्तु । मन की जो कल्पनाएँ, जो फुरने हैं वह है मिथ्या वस्तु । 'यह करूँगा तो सुखी होऊँगा', 'यह पाऊँगा तो सुखी होऊँगा', 'यहाँ जाऊँगा तो सुखी होऊँगा'... इन वस्तुओं में उलझ-उलझकर ही आपने अपने जीवन को टुकड़े-टुकड़े कर डाला है ।

सत्-वस्तु से तात्पर्य है अपना आत्मा-परमात्मा । सत्संग के द्वारा सत्त्वगुण बढ़ाकर हम अपने उस सत्यस्वरूप को पा लें । दो चीजें होती हैं : एक होती है नित्य, दूसरी होती है मिथ्या । **बुद्धिमान व्यक्ति वही है जो मिथ्या वस्तु के बजाय नित्य वस्तु को पसंद करे, सत्-वस्तु को पसंद करे ।** वास्तव में सत्-वस्तु तो एक ही है और वह है परमात्मा । फिर उसे परमात्मा कहो या आत्मा, ब्रह्म कहो या ईश्वर, राम कहो या शिव... सब तत्त्वरूप से एक ही है ।



मानव को जो नित्य है उसकी प्राप्ति का यत्न करना चाहिए और जो मिथ्या है उसका उपयोग करना चाहिए । परंतु आप करते क्या हैं ? जो नित्य है उसकी ओर ध्यान ही नहीं देते और मिथ्या की प्राप्ति में ही अपना पूरा जीवन नष्ट कर डालते हैं । जो वस्तु मिलती है वह पहले हमारे पास नहीं होती तभी तो मिलती है और बाद में भी वह हमारे पास से चली जाती है मिथ्या होने से । जो पहले नहीं था वह मिला और जो मिला उसे छोड़ना ही पड़ेगा । किंतु **परमात्मा मिलता नहीं इसलिए वह छूटता भी नहीं, वह सदा प्राप्त है ।**

ऐसी कोई मिली हुई वस्तु नहीं जिसे आप सदा रख सकें । आपको जो वस्तु मिली, मिलने से पूर्व वह आपके पास नहीं थी, तभी तो मिली । अतः जो वस्तु आपको मिली वह आपकी नहीं है और जो आपकी नहीं है वह आपके पास सदा के लिए रह भी नहीं सकती । देर-सवेर उसे आपको छोड़ना ही पड़ेगा या तो वह वस्तु स्वयं आपको छोड़कर चली जायेगी । चाहे फिर नौकरी हो, मकान हो, परिवार हो, पति हो, पत्नी हो, चाहे तुम्हारी स्वयं की देह ही क्यों न हो... देह भी तुम्हें मिली है अतः देह को भी छोड़ना पड़ेगा ।

बचपन मिला था, छूट गया । जवानी तुम्हें मिली है, छूट जायेगी । बुढ़ापा तुम्हें मिलेगा, वह भी छूट जायेगा । मौत भी आकर छूट जायेगी लेकिन **तुममें मिलना और छूटना नहीं है क्योंकि तुम शाश्वत हो ।** जो मिली हुई चीज है उसको आप सदा रख नहीं सकते और अपने-आपको आप छोड़ नहीं सकते, कितना सनातन सत्य है ! लोग बोलते हैं कि संसार को छोड़ना कठिन है किंतु संत कहते हैं, संतों का अनुभव है कि संसार को सदा रखना असम्भव है और परमात्मा को छोड़ना असम्भव है । ईश्वर को आप छोड़ नहीं सकते और संसार को आप रख नहीं सकते ।

बचपन को आपने छोड़ने की मेहनत की थी क्या ? नहीं ! छूट गया । जवानी को छोड़ना चाहते हो क्या ? अपने-आप छूट रही है । बुढ़ापे को आप छोड़ना चाहते हो क्या ? अरे, आप रखना चाहो तो भी छूट जायेगा । ऐसे ही निंदा छोड़ूँ...

स्तुति छोड़ूँ... मान छोड़ूँ... अपमान छोड़ूँ... नहीं, सब अपने-आप छूटते जा रहे हैं। एक साल पहले जो तुम्हारी निंदा-स्तुति हुई थी उसका दुःख या सुख आज तुम्हें होता है क्या ? नहीं, पुराना हो गया। पहले दिन जो निंदा हुई वह बड़ी भयानक लगी होगी, जो स्तुति हुई वह मीठी लगी होगी किंतु आज देखो तो वे पुरानी हो गयीं, तुच्छ हो गयीं। संसार की ऐसी कोई परिस्थिति नहीं जिसे आप रख सकें। आपको छोड़ना नहीं पड़ा है भैया ! सब छूटा चला जा रहा है। जिसको आप कभी छोड़ नहीं सकते वह है सत्-वस्तु और जिसको आप सदा रख नहीं सकते वह है मिथ्या वस्तु। अतः **मिथ्या का उपयोग करो और सत् का साक्षात्कार कर लो। सत्संग यही सिखाता है।**

दो वस्तु देखी गयी हैं : एक वह है जो बह रही है और दूसरी वह है जो रह रही है। बहनेवाली वस्तु है संसार और रहनेवाली वस्तु है परमात्मा। बहनेवाली वस्तु के बहने का मजा लो और रहनेवाली वस्तु का साक्षात्कार करके रहने का मजा ले लो तो सदा मजे में ही रहोगे। व्यक्ति तब दुःखी होता है जब बहनेवाली वस्तु को रखना चाहता है और रहनेवाली वस्तु से मुख मोड़ लेता है।

जब-जब दुःख और मुसीबतों से व्यक्ति घिर जाय तब-तब वह समझ ले कि बहनेवाले मिथ्या जगत की आसक्ति उसको परेशान कर रही है और रहनेवाले आत्मा के विषय का उसको ज्ञान नहीं है, उसकी प्रीति नहीं है इसीलिए वह परेशान है। जब भी मुसीबत आये... दुःख, चिंता, शोक, भय - ये तमाम प्रकार की जो मुसीबतें हैं, इन सारी मुसीबतों का एक ही इलाज है कि **बहनेवाली वस्तु को बहनेवाली मानो और रहनेवाले आत्मा से प्रीति कर लो तो सारी परेशानियाँ भाग जायेंगी।** □

इन तिथियों का लाभ अवश्य लें

२१ अप्रैल : श्रीराम नवमी

२३ अप्रैल : कामदा एकादशी (व्रत से ब्रह्महत्या आदि पापों तथा पिशाचत्व आदि दोषों का नाश)

२७ अप्रैल से २६ मई : वैशाख मास व्रत (वैशाख मास में भक्तिपूर्वक किये गये दान, जप, हवन, प्रातः पुण्यस्नान आदि शुभ कर्मों का अक्षय तथा १०० करोड़ गुना अधिक पुण्य)

२ मई : पूज्य संत श्री आशारामजी बापू का अवतरण दिवस, रविवारी सप्तमी (दोपहर २:५१ से ३ मई सूर्योदय तक)

७ मई : वरूथिनी एकादशी (सौभाग्य, भोग, मोक्ष प्रदायक व्रत; १०,००० वर्षों की तपस्या के समान फल। माहात्म्य पढ़ने-सुनने से १००० गोदान का फल)

१४ मई : अक्षय तृतीया (पूरा दिन शुभ मुहूर्त), त्रेता युगादि तिथि (स्नान, दान, जप, तप, हवन आदि का अनंत फल), विष्णुपदी संक्रांति (पुण्यकाल : दोपहर १२:३५ से सूर्यास्त) (ध्यान, जप व पुण्यकर्म का लाख गुना फल)

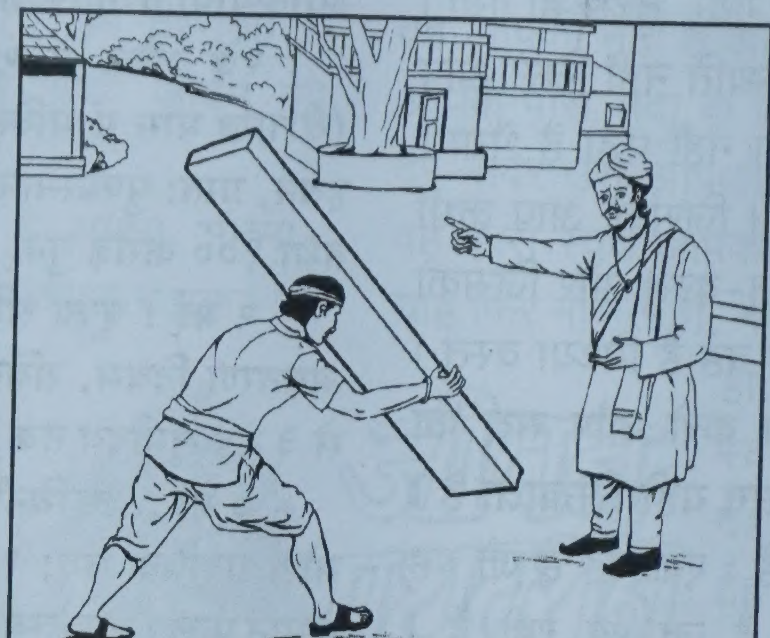
(अधिक जानकारी हेतु आश्रमों में व समितियों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध कैलेंडर, डायरी लें।)

जीवन पवित्र कब ?

मनुष्य के व्यवहार में दो ही बातें देखने योग्य होती हैं : **एक तो वह बोलता क्या है और दूसरा वह सोचता क्या है ? जब कोई पवित्र वाणी बोलता है और पवित्र वस्तु के बारे में विचार करता है तब समझो कि उसका अंतःकरण पवित्र है, उसका जीवन पवित्र है।** अन्यथा जो सोचने में भी दुष्ट और बोलने में भी दुष्ट हो उसका जीवन तो दुष्टता से भरपूर होता ही है।

देर-सवेर अपने स्वरूप की ओर वापस लौटना ही पड़ेगा

आजकल कई लोग विज्ञान-विज्ञान... आधुनिकता-आधुनिकता... करके जीवन की वास्तविकता को प्रकटानेवाली आत्मविद्या से दूर होकर अपनी असीम शक्तियों और सच्चे आनंद से अनजान रहते हैं। अपने वास्तविक कर्तव्यपालन की ओर ध्यान नहीं देते और मनमाने अधिकारों के लिए किसी भी हद तक उतरने को तैयार हो जाते हैं। ऐसे लोग शरीर की सुख-सुविधा तक ही सीमित खोजों और पाश्चात्य आचार-विचार को सिर-आँखों पर रखकर घूमते हैं और हमारी संस्कृति की ऋषि-विज्ञान पर आधारित परम्पराओं को निम्न या उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं, आत्मस्वरूप में जगे महापुरुषों की सर्वहितकारी खोजों को महत्त्व नहीं देते। परिणामस्वरूप वे अशांत और खिन्न होकर भटकते-भटकते अमूल्य मानव-जीवन को व्यर्थ खो देते हैं। ऐसी ही मानसिकतावाला एक व्यक्ति स्वामी रामतीर्थजी के पास आया।



स्वामी रामतीर्थजी बताते हैं कि ''एक अंग्रेजी पढ़ा हुआ व्यक्ति पूछता है कि ''महाराज! विज्ञान तो यही जनाता है कि बल और शक्ति से काम लेकर अपने अधिकारों को स्थिर रखना, अपनी महिमा को बढ़ाये जाना और जीवन का आनंद उठाना हमारा ठीक कर्तव्य है। ऐसा करने में यदि किसीको हानि पहुँचती है तो वह अपनी नासमझी और दुर्बलता का दंड स्वयं पा रहा है, हमें क्या ?''

राम (स्वामी रामतीर्थजी) : ''भगवन्! एक बात में तो हिन्दू शास्त्र आपके विज्ञान के साथ बिल्कुल सहमत हैं। शास्त्र भी आज्ञा देते हैं कि अपने अधिकारों को स्थिर रखना और अपनी बड़ाई (आत्मसम्मान) को बनाये रखना मनुष्य का सबसे महान और सबसे प्रथम कर्तव्य है। **दुःखों को दूर करना और परम आनंद को प्राप्त करना यही ब्रह्मविद्या का लक्ष्य है।** सांख्य दर्शन के पहले ही सूत्र में तीन प्रकार के दुःखों - आधिभौतिक (मनुष्य या अन्य प्राणियों के संसर्ग से उत्पन्न होनेवाले दुःख), आधिदैविक (दैवी शक्तियों अर्थात् अग्नि, वायु, जल तथा यक्ष, राक्षस, पिशाच आदि से उत्पन्न दुःख) तथा आध्यात्मिक (शारीरिक व मानसिक दुःख, जैसे - रोग या ईर्ष्या, द्वेष, क्लेश आदि) दुःखों को जड़ से दूर कर देना परम पुरुषार्थ (कर्तव्य) कहा गया है। यथा -

अथ त्रिविधदुःखात्यन्त निवृत्तिरत्यन्त पुरुषार्थः ॥

(सांख्य दर्शन : १.१)

पंजाब के देहात में नियम है कि नाई लोग सामान्य सेवकों का भी काम देते हैं। बहुत समय पूर्व का वृत्तांत है कि एक गाँव के पटवारी ने अपने नाई को बुला के खूब चेताकर कहा कि ''बहुत शीघ्र भोजन करके यहाँ से सात कोस पर मेरे समधी के गाँव में जाओ, अत्यंत आवश्यक संदेशा भेजना है।''

घबराया-घबराया वह अपने घर गया। एक बासी रोटी अपनी स्त्री से ली और अँगोछे में बाँधी, इस विचार से कि 'रास्ते में कहीं खा लूँगा' और

झट चलता बना। गया! गया!... जल्दी-जल्दी ग बढ़ा रहा है, अपने स्वामी की आज्ञा किस सच्चे हृदय के साथ पूरी कर रहा है। किंतु ऐ भोले! तूने चलते समय संदेशा तो पटवारी से पूछा ही नहीं! समधी से जाकर क्या कहेगा?

नाई को इस बात का विचार ही नहीं आया। वह अपनी जल्दी ही की धुन में मग्न चला जाता । जहाँ जाना था वहाँ पहुँचकर पटवारी के समधी से मिला। वह व्यक्ति संदेशा न पाकर बड़ा व्याकुल हुआ। नाई को धमकाना या कुछ कटु वचन कहना ही चाहता था कि एक युक्ति सूझ पड़ी। तनिक देर मौन रहने के पश्चात् बोला : ''अच्छा! तुम पटवारी से तो संदेशा ले आये, खूब किया! अब हमारा उत्तर भी ले जाओ। किंतु देखो, जितने शीघ्र आये हो, उतने ही शीघ्र लौट जाओ। शाबाश!''

नाई : ''जो आज्ञा जजमान!''

पटवारी के समधी ने एक लकड़ी का शहतीर★, जिसको उठाना साहस का काम था, दिखाकर नाई से कहा कि ''यह छोटा शहतीर पटवारी के पास ले जाओ और उनसे कहना कि आपके संदेश का यह उत्तर लाया हूँ।''

बेचारे नाई ने सब काम परिश्रम और ईमानदारी से किये किंतु आरम्भ में ही भूल कर जाने का यह दंड मिला कि शहतीर सिर पर उठाये हुए पसीने से तर, पग-पग पर दम लेते, हाँफते-काँपते लौटना पड़ा।

ऐसे ही विज्ञानी तीव्र गति से उन्नति कर रहे हैं। ऑन, ऑन, ऑन, गो ऑन, गो ऑन। शाबाश! बढ़िया! गो ऑन, गो ऑन। दौड़े जा! चला चल, चल चल!

किंतु हाय! जिसके काम को जा रहा है उससे मिलकर तो आया होता!! रेलों, तारों, लैम्पों, बैलूनों को (जिनमें विषयों की खुशियाँ - विषयानंद अभिप्रेत हैं) आनंदघन आत्मा का समधी ठानकर उनकी ओर दौड़-धूप कर रहा है किंतु कान खोल के सुन ले! **इन बाहरी उलझनों, अड़ंगों और झमेलों में संतोष और आनंद नहीं प्राप्त होगा और देर में चाहे सवेर में झूठी और नकली सभ्यता का शहतीर सिर पर उठाकर भारी बोझ के नीचे कठिनता से अपने स्वरूप आत्मा की ओर वापस लौटना पड़ेगा।**

★ **लकड़ी का बहुत बड़ा और लम्बा लट्ठा जो गाँवों में प्रायः छत छाने के काम आता है।**

अपने को जानो

ऐ पृथ्वीतल के नवयुवको! खबरदार! **तुम्हारा पहला कर्तव्य अपने स्वरूप को पहचानना है।** शरीर और नाम के बंधन को गर्दन से उतार डालो और संसार के बगीचे में विषयों के दास बने हुए बोझ लादने के लिए बेकार में आवारा मत फिरो। अपने स्वरूप को पहचानकर सच्चे राज्य को सँभाल के पत्ते-पत्ते और कण-कण में फुलवारी का दृश्य देखते हुए निजी स्वतंत्रता में मस्त विचरण करो। वेदांत तुम्हारे काम-धंधे में गड़बड़ डालना नहीं चाहता, केवल तुम्हारी दृष्टि को बदलना चाहता है। संसार का दफ्तर तुम्हारे सामने खुला है। 'God is nowhere.' इसको 'ईश्वर कहीं नहीं है, संसार ही संसार है' पढ़ने के स्थान पर 'God is now here.' – **'ईश्वर अब यहाँ है', 'जिधर देखता हूँ उधर तू-ही-तू (परमात्मा-ही-परमात्मा) है।'** ऐसा पढ़ो।

मैं नहीं कहता हूँ कि तू संसार से अलग रह वरन् यह प्रेरणा करता हूँ कि जिस काम में तू रह, ईश्वर के साथ रह अर्थात् ईश्वर का ध्यान मन में रख।

वेदांत का प्रयोजन तुम्हारी चोटी मूँड़ना नहीं है; तुम्हारा अंतःकरण रंग देना उसका स्वभाव है। हाँ, यदि तुम्हारे भीतर इतना गाढ़ा रंग चढ़ जाय कि भीतर से फूटकर बाहर निकल आये अर्थात् उस सच्चे वैराग्य से कपड़े भी लाल गेरुए बना दे तो तुम धन्य हो!'' ❐

समाज को बापूजी की महती आवश्यकता है

आप कहते हैं...

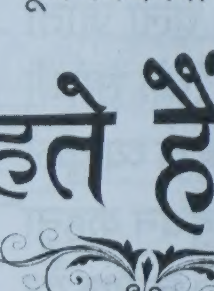


स्वामी जगदीशानंद गिरिजी, श्री पंचदशनाम जूना अखाड़ा : भारतीय संस्कृति व मर्यादा को पददलित करने (पैरों तले कुचलने) तथा युवक-युवतियों को संस्कृति से तोड़ने व विकास के अवसर से वंचित रखने का जो कुत्सित प्रयास पाश्चात्य सभ्यता के द्वारा किया गया, उसको मिटाने का कार्य हमारे बापूजी ने किया। जिस संस्कृति को भुलाने का हम सर्वथा पाप कर बैठे थे, बापूजी ने हमारी आँखों में ज्ञान का अंजन लगाकर उस संस्कृति को पुनः हमारे सामने प्रदर्शित किया। इसलिए समाज को बापूजी की महती आवश्यकता है। मैं बार-बार राष्ट्र के शासक-प्रशासकों से प्रार्थना करता हूँ कि जल्द-से-जल्द बापूजी को रिहा किया जाय !

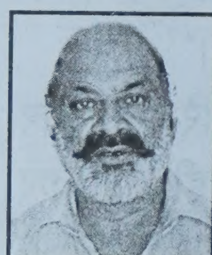


महंत परमेश्वरदासजी, महामंत्री, भारत साधु समाज, दक्षिण गुजरात : धर्म और देश की संस्कृति व संस्कार को जीवित रखने के लिए मैं संत-समाज की ओर से सरकार से यह माँग करता हूँ कि संतों के ऊपर चरित्रहनन के अनर्गल आक्षेप लगाने पर रोक लगाये। द्वारकावाले स्वामी केशवानंदजी के ऊपर चारित्रिक आरोप लगा तो निचली अदालत द्वारा उन्हें दोषी करार दिया गया था लेकिन वे निर्दोष थे, ७ वर्ष बाद वे रिहा हुए। शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वतीजी को बंद किया गया पर वे भी निर्दोष छूटे... ऐसे ही हमारे आशारामजी बापू निर्दोष हैं और उन्हें रिहा किया जाय।

भारतवर्ष के अंदर आज पाश्चात्य सभ्यता एवं विधर्मी हमारी संस्कृति व संस्कारों प कुठाराघात कर रहे थे तो किसीको भी यह विचा नहीं आया कि 'वेलेंटाइन डे की जगह मातृ-पित पूजन दिवस मनाना शुरू किया जाय।' यह प्रेरण आशाराम बापूजी ने देश और पूरे विश्व को दी। देश की संस्कृति व संस्कारों को बचाने के लिए बापूजी ने एक अलख जगायी है।



श्री आशीषदासजी महाराज, श्रीराम जन्मभूमि न्यास के अध्यक्ष महंत श्री नृत्यगोपालदासजी के कृपापात्र : हम अपने बाल्यकाल से आशारामजी बापू को सुनते आये हैं। मीडिया और अन्य लोगों ने उन पर जो आरोप लगाये हैं वे निराधार हैं। बापूजी एकदम कंचन-जल की तरह पवित्र और निर्मल हैं।

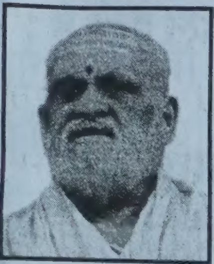


श्री विजयसिंह भारद्वाज, अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय हिन्दू परिषद, पंजाब : धर्मांतरण रोकने में बापूजी ने बहुत बड़ा काम किया है। ईसाई धर्मांतरणकर्ताओं का इंटरनेशनल जो गैंग है उसको यह बर्दाश्त नहीं हुआ और उसने बापूजी के ऊपर केस लगवाया जबकि सभीको मालूम है कि लड़की के साथ कुछ भी नहीं हुआ। बापू आशारामजी निर्दोष हैं, उनके ऊपर झूठा केस डाला गया है।



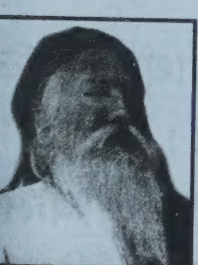
श्री नीरज सोनी, पत्रकार, छतरपुर (म.प्र.) : पूरे संसार को पता है कि कुछ विदेशी ताकतों तथा मीडिया के षड्यंत्र के कारण ब्रह्मज्ञानी संत पूज्य बापूजी को जेल →

हरिद्वार कुम्भ में संतों की माँग
'बापूजी को जल्द-से-जल्द रिहा किया जाय !'

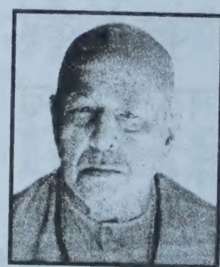


श्री १००८ महामंडलेश्वर स्वामी विश्वेश्वरानंद गिरिजी महाराज, महानिर्वाणी अखाड़ा : संत आशारामजी जैसे संत, जिनके जीवन में इतना सेवाभाव है और जिनके लाखों-करोड़ों अनुयायी हैं जो उनको भगवान मानते हैं, उन्हें षड्यंत्र के तहत जेल भेजा गया है ! भारतवासियों ने यही समझकर सरकार को चुना था कि कम-से-कम अब तो हिन्दुओं को न्याय तो मिलेगा, हिन्दू संस्कृति सुरक्षित रहेगी - इस बात पर सरकार को गौर करना चाहिए ।

सनातन धर्म के विरुद्ध षड्यंत्र चल रहा है और इसमें कई संगठन, बाहरी शक्तियाँ निरंतर काम कर रही हैं । इसको कहीं-न-कहीं रोकना चाहिए । संत सम्पूर्ण विश्व की धरोहर हैं । सम्पूर्ण मानव-जाति की रक्षा करनी है तो संतों की रक्षा होनी चाहिए ।

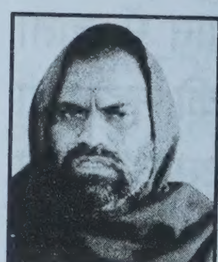


महंत श्री बर्फानी बाबा, पंचायती अटल अखाड़ा, जूनागढ़ : आशारामजी बापू को बदनाम करने के लिए अफवाह फैलायी गयी है । जब तक इनका मान-सम्मान रखा गया, संत और गौ का जब तक मान रखा गया तब तक हमारे देश में इतनी आफत नहीं आयी, जितनी अभी चल रही है । इसमें जो राजनीति खेल रहे हैं, यह हमारे लिए बहुत बुरी बात है । जब से यह माहौल बिगड़ा तब से हमारे धर्म को बिल्कुल खा गये । पूरा विश्व डाँवाँडोल हुआ पड़ा है ।



महामंडलेश्वर श्री १०८ स्वामी महेश्वरानंद पुरीजी महाराज : मैं संत आशारामजी को बहुत पहले से जानता हूँ । उनके जो गुरुजी थे लीलाशाहजी महाराज, वे हर साल यहाँ (हरिद्वार) आते थे ।

बापूजी के ऊपर यह तो खुला षड्यंत्र है, इसमें कुछ पूछने का प्रश्न ही नहीं है ।



स्वामी शिवानंदजी महाराज, उमाशक्ति पीठ, हरिद्वार : बापूजी ने इस देश-धर्म-संस्कृति के लिए अपना पूरा जीवन अर्पित कर दिया । जो आसुरी शक्तियाँ हैं उनसे उनका यश, वैभव, कीर्ति देखी नहीं जाती । तो कोई-न-कोई ऐसी षड्यंत्रकारी रचनाएँ करते हैं जिनसे संतों के चरित्र पर लांछन लगा के उनको बदनाम किया जाय और सनातन धर्म को टारगेट बनाया जाय ।

(संकलक : धर्मेन्द्र गुप्ता) ❑

→ में रहना पड़ रहा है । उनकी बेगुनाही के ढेरों प्रमाण हैं, उसके बाद भी देश की न्याय व्यवस्था, कानून व्यवस्था और देश की सियासत से ब्रह्मज्ञानी संत को छोड़ने में संकोच कर रही हैं । देश का दुर्भाग्य है कि देश में जो बड़े-बड़े दुर्दांत अपराधी हैं वे जमानत या पेरोल पर रिहा कर दिये जाते हैं लेकिन एक निर्दोष संत को जेल के अंदर रखा जाता है । ❑

ऐसी सुख-शांतिदायी ऋषि प्रसाद कौन नहीं लेना चाहेगा ?



मैं २००२ से २०१२ तक महाराष्ट्र पुलिस में इंस्पेक्टर के पद पर कार्यरत था। पूज्य बापूजी से दीक्षा लेने के बाद मैं साधना-सेवा में लग गया। गुरुदेव के बताये मार्ग पर थोड़े ही समय चलने से मुझे जो मिला उसके आगे दुनियावी पद-प्रतिष्ठा से मिलनेवाला सुख मुझे तुच्छ लगने लगा । मेरे मन में होता था कि 'नश्वर धन और नौकरी में मैंने जीवन के कई वर्ष बिता दिये, अब बचा हुआ समय शाश्वत सम्पत्ति कमाने में, गुरुसेवा में लगाऊँ ।'

मेरे रिटायरमेंट को ७ साल बचे थे तब मैंने गुरुदेव से अनुमति लेकर नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और 'ऋषि प्रसाद' की सेवा एवं साधना में लग गया । इससे मुझे जो मिला वह अवर्णनीय है ।

अभी मैं ऋषि प्रसाद के अभियान में जाता हूँ। एक बार एक बहन ने ऋषि प्रसाद की सदस्यता लेने से मना कर दिया । जब मैं अगले महीने उनकी सोसायटी में पत्रिका देने गया तो उन्होंने स्वयं मुझे बुलाया और कहा : ''हमें भी ऋषि प्रसाद की सदस्यता ग्रहण करनी है ।''

मैंने पूछा : ''पिछले महीने तो आपने पत्रिका की सदस्यता लेने से मना कर दिया था । अब क्यों लेना चाहती हैं ?''

उन बहन ने बताया कि ''हमारे एक पड़ोसी बहुत दारू पीते थे । उनके घरवाले सभी तरह के उपाय करके थक गये थे । घर में झगड़े भी बहुत होते थे लेकिन जब से उनके घर 'ऋषि प्रसाद' आने लगी तब से उनका दारू पीना छूट गया और घर का माहौल भी बदल गया । ऐसी सुख-शांति देनेवाली 'ऋषि प्रसाद' की सदस्यता कौन नहीं लेना चाहेगा ?''

मेरे मन में हुआ कि 'ऋषि प्रसाद का कैसा अद्भुत प्रभाव है ! पूरा जीवन ही बदल देती है ।'

जरूरत है तो बस, लोगों तक सच्चाई पहुँचाने की

सन् २०१३ में गुरुदेव के जोधपुर जाने के बाद की बात है । मैं ऋषि प्रसाद के अभियान में गया तो एक बहन ने ऋषि प्रसाद लेने से मना कर दिया और मुझसे बापूजी के केस के बारे में पूछने लगीं ।

मैंने उनको मेडिकल रिपोर्ट, बापूजी के केस से संबंधित पेपर आदि दिखाये, ऋषि प्रसाद का सुप्रचार अंक दिया तथा पूज्य बापूजी व आश्रम द्वारा चलाये जा रहे सेवाकार्यों के बारे में बताया । इसका उनके चित्त पर विलक्षण प्रभाव पड़ा । उन्होंने कहा : ''मैं औरों को भी सच्चाई बताऊँगी कि बापूजी को फँसाया गया है ।''

तब मेरे मन में हुआ कि 'लोग बापूजी के केस की सच्चाई समझना चाहते हैं । बस, आवश्यकता है तो लोगों तक पहुँचकर उनको सच्चाई बताने की ।'

गुरुदेव के श्रीचरणों में यही प्रार्थना है कि मेरी सेवा-निष्ठा दिनोंदिन और बढ़े ।

- गौतम ताम्बोली,
सेवानिवृत्त पुलिस निरीक्षक
सचल दूरभाष : ९८२३०५९५९६

धन-वैभव, सत्ता, सौंदर्य से सुख मिलता है ऐसी बात नहीं, भगवान के, भगवत्प्राप्त महापुरुषों के वचनों को समझने से परम सुख मिलता है ।
- पूज्य बापूजी

अपने जन्मदिन व महापुरुषों के अवतरण दिवस पर क्या करें ?

- पूज्य बापूजी

अवतार होना, किसी महापुरुष का धरा पर ाना अथवा भगवान का अवतरित होना यह वेधि के विधान में एक व्यवस्था है । बहुत लोगों ी माँग तो है लेकिन उसकी पूर्ति की दिशा हीं है, एकतानता नहीं है । ऐसी माँगों के ंकल्प एकत्र होकर जिन पुरुष में दिखाई देते वे समाज में अवतार ी नाईं पूजे जाते हैं । हात्मा बुद्ध हों, चाहे ौर कोई हों, चाहे माज में आत्मविश्रांति देनेवाले महापुरुष हों ।

समाज को शोषण े बचाकर अपने पैरों पर खड़ा करने और अविद्या, अहंकार को मिटाने के लिए मध्यरात्रि को जिस अवतार को अवतरित होना पड़ा उसका ाम है 'कृष्णावतार' ।

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी को ध्याह्न के ठीक १२ बजे संसार के तापों से तप्त जीवों को मर्यादा की राह दिखाकर सुख-शांति का साम्राज्य देने हेतु जो अवतार हुआ वह है 'रामावतार' ।

जो कंस, रावण जैसे के संहार का बड़ा निमित्त लेकर आये और दुष्टों का दमन करते हुए संसार को सही रास्ता दिखाये उसे बोलते हैं **नैमित्तिक अवतार** ।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।...

(गीता : ४.७)

जब-जब धर्म की हानि होती है और अधर्म जोर पकड़ता है तब-तब भगवान की शक्ति का, चेतना का अवतरण होता है ।

पूज्य बापूजी का अवतरण दिवस

२ मई

संतों का अवतरण **नित्य अवतार** श्रेणी में माना गया है । जैसे गुरु नानकजी, गोविंदसिंहजी, तेग बहादुरजी आये, संत कबीरजी, श्री रामकृष्ण, रामानुजाचार्यजी, वल्लभाचार्यजी, गोविंदपादाचार्यजी, गौरांग, साँईं लीलाशाहजी आये । कभी कहीं, कभी कहीं ऐसे महापुरुषों के रूप में अवतरित होकर परमात्म-सत्ता समाज का हित करती है, उसको बोलते हैं 'नित्य अवतार' ।

आत्मसाक्षात्कार के पहले वर्षगाँठ ऐसे मनायें

संत-महापुरुष कहते हैं कि जब तक आत्मसाक्षात्कार नहीं होता है तब तक साधारण लोग जन्मदिन मनायें तो उन्हें यह करना चाहिए :

पहली बात, रो लेना चाहिए । जब-जब एक वर्ष पूरा हो तो याद करें कि जिसके लिए (परमात्मप्राप्ति के लिए) मनुष्य-जन्म था वह काम हुआ कि नहीं हुआ ? वह अभी नहीं हुआ तो उस दिन रो लेवें कि 'अभी तक परमात्मा का अनुभव नहीं हुआ, इतने वर्ष व्यर्थ गये ।'

स्वामी रामतीर्थ रोते थे कि 'अरे ! २१ साल बीत गये । २१वाँ जन्मदिन है यह झूठी बात है, २१ साल मैं मरा हूँ । हर रोज मरते-मरते आज २१ साल हो गये । जब अपने जीवात्मा को परमात्मा के रूप में प्रकट देखेंगे तब हमारा सच्चा जन्म होगा ।'

दूसरी बात, वर्षभर में काम, क्रोध, लोभ, भय, चिंता से जो हानि हुई है, उसका सिंहावलोकन करके ऐसा मौका जीवन में फिर नहीं लायेंगे और इस आनेवाले वर्ष में इतना दान-पुण्य करेंगे, इतना जप करेंगे... ऐसा कुछ-न-कुछ नियम बना लें ।

तीसरी बात, प्रतिदिन ५-१० मिनट के लिए कमरा बंद करके ईमानदारी से कीर्तन करें ताकि छुपी हुई शक्तियों का विकास हो । इससे भक्ति की भावनाओं का विकास होता है, छुपा हुआ ज्ञान प्रकट होकर धधकता है, छुपा हुआ प्रेम पल्लवित होता है और जीवन सुशोभित हलके फूल जैसा विकसित होता है ।

२४ घंटे में १४४० मिनट होते हैं । १४०० मिनट तो तुम्हारे हैं परंतु ४० मिनट हमारे हैं । १०-१० मिनट की चार संध्याएँ करो - सुबह, दोपहर, शाम और रात । रातवाली संधि को शाम में ले आओ । ईमानदारी से किया गया ध्यान, जप तुम्हारी जीवनीशक्ति को, जीवन को विकसित करेगा । (४० मिनट प्रारम्भिक समय है । कोई इससे अधिक समय ध्यान-भजन करते हैं तो अच्छा ही है ।)

जब-जब तुम्हारे इस शरीर का जन्मदिन हो तब-तब ऐसा कुछ-न-कुछ नियंत्रण बना लेना, नियम ले लेना कि तुम्हारे जीवन का विकास हो । **अपने द्वारा की हुई भलाइयाँ भूल जायें और किसीके द्वारा की हुई बुराई भी भूल जायें, आप जीवन में सुखी रहेंगे ।** बीते हुए वर्ष और आनेवाले वर्ष की संधि है वर्षगाँठ । इस संधि में संधिदाता को पहचानने का संकल्प करना वर्षगाँठ मनाने का उद्देश्य है ।

यह भेंट तो देनी ही चाहिए

बोले : 'बाबाजी ! आपका जन्मदि आनेवाला है तो हम क्या करें ?'

जो तुम करते हो करो पर याद रखना, उ दिन बाबाजी को कुछ-न-कुछ भेंट देनी चाहिए और बाबाजी तुम्हारे रुपये-पैसे, वस्त्र, मिठा भेंट नहीं चाहते । जिस वस्तु-परिस्थिति तुम्हारी आसक्ति हो, अपन आसक्ति कागज में लिखन और उस आसक्ति क छोड़ने के संकल्प के साथ वह कागज यहाँ (व्यासपीठ पर) अर्पण करके जाना, वह तुम्हारी भेंट हो जायेगी ।

> **जिस वस्तु-परिस्थिति में तुम्हारी आसक्ति हो, अपनी आसक्ति कागज में लिखना और उस आसक्ति को छोड़ने के संकल्प के साथ वह कागज यहाँ (व्यासपीठ पर) अर्पण करके जाना, वह तुम्हारी भेंट हो जायेगी ।**

बीड़ी-दारू तो मेरे साधक नहीं पीते यह मुझे १०० प्रतिशत विश्वास है परंतु गपशप लगाते हैं । तो संकल्प करें कि 'इस वर्ष गपशप के ऊपर प्रतिबंध लगाता हूँ ।' अथवा तो जो-जो कमजोरियाँ हैं, आसक्तियाँ हैं उन्हें निकालने का संकल्प करें । दूसरा संकल्प यह करें कि 'इस पूरे वर्ष में गुरुमंत्र का अनुष्ठान करूँगा ।' संकल्प कर लेना फिर उसे लिखकर उसकी २ प्रतियाँ बनाना । एक प्रति यहाँ के भंडार में (व्यासपीठ या बड़ बादशाह पर) डाल के जाना दक्षिणा के रूप में तथा एक प्रति अपने पास रखना और हर सप्ताह उसको पढ़कर अपने जीवन को जीवनदाता के करीब आगे बढ़ाना - यह दक्षिणा हो जायेगी । जन्मदिवस पर दक्षिणा तो देना है पर यही दक्षिणा देना है । ❒

गुरु-सान्निध्य के अविस्मरणीय मधुर संस्मरण



डीसा (गुज.) की रहनेवाली खुशाली बहन खत्री (वर्तमान निवास - अहमदाबाद), जिनको सन् १९७४ में पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षा लेने का तथा ६-७ साल की उम्र से ही पूज्यश्री के सत्संग एवं सेवा का सौभाग्य मिला है, वे उन परम सौभाग्यशाली क्षणों को याद करते हुए पूज्यश्री के कुछ मधुर व प्रेरणादायी प्रसंग बताते हुए कहती हैं :

अद्भुत था पूज्यश्री का वह तेजोमय विग्रह !

पूज्य बापूजी जब डीसा में रहकर अपनी ब्राह्मी स्थिति की अलमस्ती में सराबोर रहते थे तब से मुझे पूज्यश्री के सत्संग-सान्निध्य का लाभ मिलता रहा है। जब बापूजी पहली बार मधुकरी (भिक्षा) लेने गये थे तब एक सिंधी माई ने उन्हें भिक्षा देने से मना कर दिया था, यह प्रसंग तो सभीने सुना ही होगा। उन माई के घर से २-४ घर आगे ही हमारा घर था।

बापूजी मधुकरी लेने आते थे तब मैं ६-७ साल की थी। हाथ में पीतल का कमंडल लिये तथा पैरों में कभी चप्पल तो कभी जूते पहने जब पूज्य बापूजी आते थे तो कॉलोनी के हम छोटे बच्चे बापूजी के सफेद कपड़े, काले-काले घुँघराले बाल, गोरा-गोरा चेहरा देखते ही रह जाते थे। मेरी माँ तो बापूजी को देख के श्रद्धा-भक्ति से भर जाती थी कि 'कैसे अलमस्त बाबा हैं ! काश ! हमारे घर से भी कुछ भोजन-प्रसाद स्वीकार कर लें।'

हमको किसीसे पता चला कि वे पूज्य लीलाशाहजी बापू के शिष्य हैं और बहुत अच्छा सत्संग करते हैं। मेरी माँ एक बार आश्रम में सत्संग सुनने गयी और उसी दिन से उसका जीवन बदल गया। उसके चित्त पर सुख-दुःख आदि का प्रभाव पहले की भाँति नहीं पड़ता था। बस, सत्संग सुनती और उसी मस्ती में मस्त रहती। मुझे भी सत्संग का रंग लग गया। फिर तो हम रोज ही बापूजी के दर्शन करने और सत्संग सुनने जाने लगे।

पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग

पूज्य बापूजी का साधना का एक कमरा था। कमरे के बाहर छोटा-सा बरामदा और एक चबूतरा था। बापूजी कभी-कभी बरामदे में बैठकर थोड़ा-सा सत्संग करते थे फिर दरवाजा बंद कर लेते थे। कभी एकदम मौज में होते थे तो बाहर चबूतरे पर आकर भी सत्संग करते थे। उस समय सत्संग सुनने २५-३० लोग आते थे।

पूज्यश्री अधिकतर कमरे के अंदर ध्यानस्थ ही रहते थे। जब कभी बापूजी अपनी कुटिया का दरवाजा थोड़ा-सा ही खोलते तब उसमें प्रकाश-ही-प्रकाश दिखता था, मानो पूज्यश्री का तेज उनमें समा ही न पा रहा हो !

बापूजी का वह तेज तो बाप रे ! कोई चाहकर भी न भुला सके ऐसा विलक्षण था ! हम उस तेज के सामने आँख नहीं टिका पाते थे। किसकी ताकत थी कि उनके नेत्रों में झाँक सके ! उस समय जब कभी बापूजी की दृष्टि हम पर पड़ जाती थी तो फिर हम नहीं रहते थे, वे ही रह जाते थे। उस अनुभव का पूरा वर्णन नहीं हो सकता है। आज भी उनका वह पावन तेजोमय

विग्रह स्मरण आता है तो हृदय रोमांचित हो उठता है ।

...और मेरे साँईं ने मेरी प्रार्थना सुन ली

जब पूज्य बापूजी का डीसा से अहमदाबाद जाना हुआ तो मैं कभी-कभी माँ के साथ पूज्यश्री के दर्शन-सत्संग हेतु अहमदाबाद आश्रम में जाती थी । बापूजी हम डीसावालों को देखकर बहुत प्रसन्न हो जाते थे, जैसे उनके अपने परिजन ही आये हों ! बापूजी हमारा बहुत ध्यान रखते थे । उनके स्नेह और करुणा की बहुत याद आती है । कभी अम्माजी (पूज्य बापूजी की मातुश्री श्री माँ महँगीबाजी) तो कभी मैयाजी (पूज्यश्री की धर्मपत्नी लक्ष्मीदेवीजी) स्वयं हमारे लिए भोजन बनाती थीं और बड़े ही प्रेम से हमको भोजन परोसती भी थीं ।

> **पूज्यश्री अधिकतर कमरे के अंदर ध्यानस्थ ही रहते थे । जब कभी बापूजी अपनी कुटिया का दरवाजा थोड़ा-सा ही खोलते तब उसमें प्रकाश-ही-प्रकाश दिखता था, मानो...**

सन् १९८० के आसपास की घटना है । शादी के बाद मैं डीसा से २५-३० कि.मी. दूर दांतीवाड़ा में रहने चली गयी । २-३ सालों तक मैं बापूजी के दर्शन नहीं कर पायी । गुरुदेव के दर्शन-सान्निध्य के लिए तड़प होती थी लेकिन मैं बापूजी को कैसे बोलूँ कि दांतीवाड़ा आओ ? मैं बस बापूजी से प्रार्थना करती रहती थी ।

अंतर्यामी गुरुदेव ने मेरी प्रार्थना सुन ली और एक दिन समाचार मिला कि 'साँईं १० बजे दांतीवाड़ा आनेवाले हैं ।' थोड़ी-बहुत ही तैयारी हो पायी थी कि इतने में बराबर १० बजे बापूजी की गाड़ी हमारे घर के ठीक सामने खड़ी हो गयी । पूज्यश्री को देखकर मैं एकदम दंग रह गयी !

बापूजी के साथ आश्रम के कुछ भाई-बहन थे । हम सबने गुरुदेव की आरती उतारी । बापूजी ने घर में बैठकर आधा-पौना घंटा सत्संग दिया । अपने कमंडल के जल का सारे घर में छिड़काव किया और आशीर्वाद दिया । आज जब वे स्वर्णिम घड़ियाँ याद आती हैं तो उनका एक-एक दृश्य आँखों में आँसू छलका देता है ।

ये तो साक्षात् परब्रह्म-परमात्मा हैं

सन् १९८० की बात है । मुझे शादी के ४ साल बाद भी संतान नहीं हो पायी थी । डॉक्टर को दिखाने पर उन्होंने मेरे पतिदेव से कहा कि 'ये कभी माँ नहीं बन पायेंगी ।' मेरे पतिदेव रिपोर्ट लेकर घर आये और यह बात मेरी सासु माँ के अलावा किसीको नहीं बतायी, मुझे भी नहीं बतायी थी ।

उन्हीं दिनों कपड़े धोते समय मेरा ध्यान गया कि सासु माँ की साड़ी में एक गाँठ बँधी रहती है । मुझे उसका रहस्य समझ में नहीं आया पर उनके सम्मानवश मैं इस विषय में घर में किसीको पूछ भी नहीं पा रही थी । मैं तो बस अपने बापूजी को ही भगवान मानकर पूजा-पाठ व ध्यान-भजन में लगी रहती थी ।

गुरुकृपा से मुझे बेटा हुआ । बेटा सवा महीने का होने के बाद मैं अपनी माँ के साथ अहमदाबाद आश्रम में गुरुदेव के दर्शन करने गयी । उस समय बड़ बादशाह के पास एक हॉल बना हुआ था । हम गये तो हॉल में ५०-६० लोग सत्संग सुन रहे थे । हम भी सत्संग में बैठ गये । इतने में अचानक बापूजी ने सबके सामने हमें खड़ा किया और मुझे बुलाया : ''खुशाली

बेटी ! यहाँ आओ ।''

'हमसे कुछ गलती तो नहीं हुई ?' यह सोच के हमारे पाँव थरथर काँपने लगे । गुरुदेव ने कहा : ''क्यों, डॉक्टरों ने बोला था न, कि तू माता नहीं बनेगी ? सद्गुरु में श्रद्धा और विश्वास होता है तो भगवान असम्भव को भी सम्भव कर देते हैं । देखो, यह बच्चा हुआ कि नहीं हुआ ? सबके सामने है ।''

मुझे तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था क्योंकि डॉक्टर की बतायी हुई बात उस समय तक मुझे और मेरी माँ को पता नहीं थी, केवल पतिदेव व सासु माँ को पता थी । उस समय मेरी सासु माँ भी वहाँ नहीं थीं । मेरी माँ भाव में आकर रोने लगी और बापूजी से बोली : ''हमको तो यह बात मालूम नहीं साँईं !'' बापूजी ने हमें प्रसाद दिया और बैठने को कहा ।

उन दिनों में मुझे अम्माजी का भी सान्निध्य बहुत मिला । अम्माजी प्रतिदिन बड़े प्रेम से मक्खन बनाकर मेरे बेटे को स्वयं अपने करकमलों से खिलाती थीं । मुझे छाछ पीने को देतीं और बोलतीं कि 'तू छाछ पी तो दूध अच्छा आयेगा । बच्चा अच्छा बनेगा ।' अम्माजी का वह निर्दोष प्रेम, सरल, उदार एवं करुणामय स्वभाव बड़ा ही विलक्षण, मधुर तथा अविस्मरणीय था ।

कुछ दिन बाद जब गुरुदेव से हुई वार्ता सासु माँ को पता चली तो उनकी आँखें भर आयीं । उन्होंने मेरी माँ को बताया : ''हाँ बहन ! जब मुझे बेटे से पता चला कि बहू कभी माँ नहीं बनेगी तो मैंने उसी दिन रात को साड़ी के पल्ले में एक गाँठ बाँध दी । मुझे पता था कि बहू बापूजी को ही अपना भगवान मानती है इसलिए मैंने मन में संकल्प किया : 'अगर इसके गुरु भगवान सच्चे होंगे तो इसकी गोद भर जायेगी । जब बच्चा होगा तभी मैं साड़ी की गाँठ खोलूँगी ।' इतना कहकर सासु माँ आश्चर्य करने लगीं कि आखिर मेरे और बेटे के बीच की बात साँईं कैसे जान गये !''

इस घटना के २-३ वर्षों के बाद की बात है । मैं सासु माँ के साथ अहमदाबाद आश्रम गयी थी । पूज्य बापूजी ने कुछ क्षण सासु माँ की ओर देखा और फिर मेरे पतिदेव से कहा : ''तुम्हारी माँ ने पहले बहुत दुःख देखे हैं पर अब थोड़े सुख के दिन आये हैं । अब इनकी अच्छी तरह सेवा करना और ध्यान रखना ।''

वास्तव में मेरी सासु माँ ने पूर्व-जीवन में बहुत दुःख झेले थे । सासु माँ ने जब यह बात गुरुदेव के श्रीमुख से सुनी तो बापूजी के आगे बहुत रोने लगीं और बार-बार गुरुदेव को प्रणाम करने लगीं । हमको बोलीं कि ''बापूजी को किसने बताया कि मेरे को दुःख मिले हैं ! सच में, त्रिकालदर्शी, सर्वांतर्यामी पूज्य बापूजी साक्षात् हाजरा-हजूर परब्रह्म-परमात्मा हैं ।'' इस घटना के बाद बापूजी के प्रति सासु माँ की श्रद्धा और भी बढ़ गयी । (क्रमशः) ❐

अमृतबिंदु - *पूज्य बापूजी*

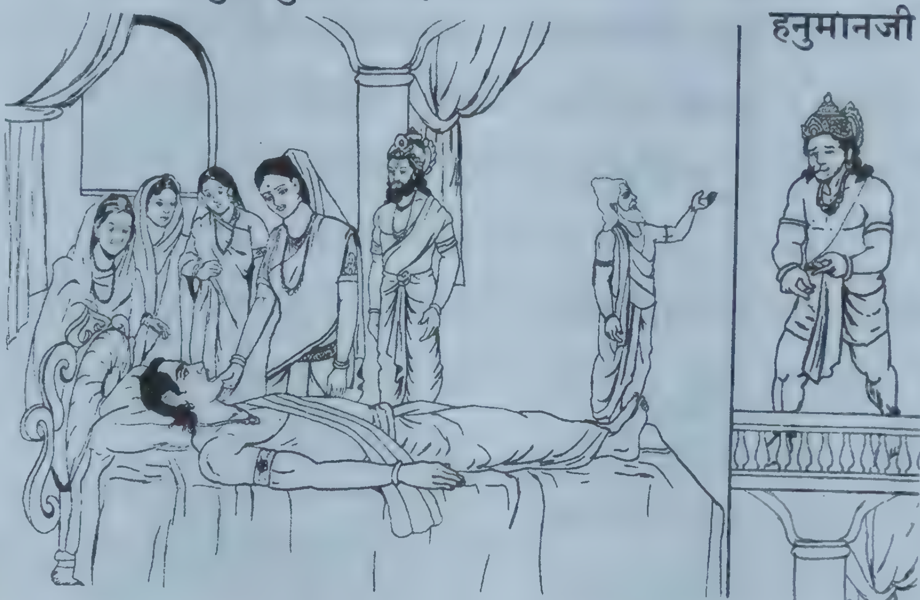
* हमारी बुद्धि पवित्र है और विकसित है इसकी कसौटी क्या है ? बुद्धि पवित्र और विकसित है तो हमें परमात्मा के ध्यान में रुचि होगी । परमात्मा के तत्त्वज्ञान में हमारी गति होने लगेगी और जीवन की शाम होने से पहले अपने अखंड, आनंदस्वरूप ईश्वर को पाने के लिए हमारा निश्चय बनेगा ।

* सत्यस्वरूप परमात्मा के साथ अपने स्वतःसिद्ध एकत्व का जिन्हें अनुभव हुआ है उन महापुरुषों को 'सद्गुरु' कहा जाता है ।

ऐसी सेवा स्वामी को वश में कर देती है - पूज्य बापूजी

श्रीराम नवमी : २१ अप्रैल, श्री हनुमान जयंती : २७ अप्रैल

उत्साही शिष्य सद्गुरु की सेवा करने का, अपने स्वामी को रिझाने का साधन खोज लेता है। भले उसको कोई सेवा बताओ नहीं, कोई सेवा दो भी नहीं, तब भी जिसको उत्साह है वह सेवा खोज लेगा। रामराज्य के बाद एक बार लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न ने सीता माता का सहयोग लेकर प्रभु की सुबह से ले के रात्रि के शयन तक की सारी सेवाओं की सेवा-तालिका बनायी और कौन क्या-क्या सेवा करेगा इस पर रामजी से हस्ताक्षर करवा लिये।



दूसरे दिन आये हनुमानजी, उठाया पंखा तो भरत कहते हैं : ''यह मेरी सेवा है।''

और कुछ सेवा करने गये तो सीताजी कहती हैं : ''यह मेरी सेवा है।'' लखन भैया कहते हैं : ''यह मेरी सेवा है।'' शत्रुघ्न ने कहा : ''यह मेरे अधिकार में है।'' जिस सेवा को हनुमानजी छुएँ उसमें किसी-न-किसीका अधिकार हो। हनुमानजी व्याकुल हो गये : ''प्रभुजी ! मैं सेवा के बिना कैसे रहूँगा !''

रामजी : ''हनुमान ! जो सेवा इनके ध्यान में न रही हो वह तुम ढूँढ़ लो।''

हनुमानजी तो बहुत बुद्धिमान थे। भगवान को प्रेम करते-करते उन बुद्धियोगी को याद आया कि 'और तो सारी सेवाएँ इनके अधिकार में हैं किंतु प्रभुजी को जब जम्हाई आयेगी उस समय चुटकी बजाने की सेवा इनके ध्यान में नहीं आयी। जम्हाई तो कभी भी आ सकती है तो अब सतत दर्शन होंगे।'

हनुमानजी सामने बैठ गये। रामजी ने पूछा : ''हनुमान ! क्या चाहिए बेटे ?''

''प्रभु ! कुछ नहीं चाहिए। मैं सेवा में हूँ।''

''क्या सेवा कर रहे हो ?''

''प्रभुजी को कभी भी जम्हाई आ सकती है तो मैंने चुटकी बजाने की सेवा ले ली।'' रामजी अंदर-अंदर खुश हुए कि 'देखो ! सेवक फरियाद नहीं करता और सेवा खोज लेता है।'

अब कहीं भी प्रभुजी जायें तो हनुमानजी हाजरा-हजूर मिलें। रात हुई तो माँ सीता चरणचम्पी करने गयीं। हनुमानजी ने सोचा कि 'पति-पत्नी के बीच मुझ इतने बड़े बेटे का उपस्थित रहना यह तो अमर्यादा होगी। परंतु प्रभु को दिन में जितनी जम्हाइयाँ आयीं उससे भी ज्यादा रात को शयन करते समय आ सकती हैं।' हनुमानजी खिसक गये कूद के छत पर और वहाँ चुटकी बजाना चालू किया। तो रामजी ने जम्हाई ली और उनका मुँह खुला रह गया। सीताजी कहती हैं : ''प्रभु ! क्या हुआ, क्या हुआ ?''

मुँह बंद हो तब तो बोलें ! सीताजी घबरायीं। कौसल्याजी आयीं, सुमित्रा, कैकेयी आयीं, मंत्री

सुमंत्र आये । सुमंत्र ने वैद्यराज को बुलाया ।

दवा कान थींदी मुहिंजे दर्द जी,
हकीमनि खे कहिड़ी खबर मर्ज़ जी ।

'मेरे दर्द की दवा नहीं हो सकती, हकीमों को क्या पता मेरे रोग का !'

आखिर मध्यरात्रि को सुमंत्र और उनके साथी को भेजा गया कि 'गुरु वसिष्ठजी के चरणों में जाओ ।' गुरु वसिष्ठजी आये । वसिष्ठजी बुद्धियोगियों में शिरोमणि थे । उन्होंने देखा कि सुमंत्र, कौसल्या, सीता, लक्ष्मण, भरत... सब हैं और रामजी का मुँह खुला रह गया तो क्या बात है ?' एक क्षण के लिए शांत हुए-न हुए, वसिष्ठजी को प्रकाश हुआ, 'अरे हनुमानजी दिखाई नहीं देते !'

बाहर निकले : ''नभचर सुन लें, भूचर सुन लें, हवाएँ सुन लें, दिशाएँ सुन लें ! पवनसुत हनुमान जहाँ भी हों आ जायें - मैं वसिष्ठ ब्राह्मण बोल रहा हूँ !''

वे छत पर थे, आ गये : ''जय श्रीराम !''

'जय श्रीराम' करते ही चुटकी बजाना बंद हुआ और वहाँ प्रभुजी का मुँह बंद हो गया। रामजी ने पूछा कि ''क्या बात है ?''

रामजी बोले : ''हनुमान ने चुटकी बजाना चालू रखा तो मैंने अपनी जम्हाई चालू रखी।''

सीताजी, लक्ष्मणजी हनुमानजी को कहते हैं : ''भैया ! कुछ-न-कुछ हमारी सेवा ले लो पर ऐसा दुबारा मत करना।''

सेवा स्वामी को वश में कर देती है। ❐

अमृतबिंदु - *पूज्य बापूजी*

जो सेवा को टालते हैं वे सेवा का महत्त्व नहीं जानते । सेवा तो हृदय को उभारने (ऊँचा उठाने या विकसित करने) के लिए है, सेवा बोझा नहीं है ।

अक्षय फलदायी अक्षय तृतीया

- पूज्य बापूजी

(अक्षय तृतीया : १४ मई)

अक्षय तृतीया त्रेतायुग का प्रारम्भ दिवस, नर-नारायण का प्राकट्य दिवस, परशुरामजी का प्राकट्य दिवस, भगवान हयग्रीव का अवतार दिवस, किसानों के कृषि-कार्य का आरम्भ दिवस, नूतन वर्ष का प्रारम्भ दिवस है । किसान इस दिन को वर्ष के प्रारम्भ का शुभ दिन मानकर खेत-खलियान में प्रवेश करे तो उसे बरकत आने के शकुन मानते हैं ।

अक्षय तृतीया भगवान बद्रीनाथ के पट खुलने का दिवस है तो आपके दिल के दिलबर के पट खुलने का दिवस भी है। हरि हमारे हृदय के पट खोलें। 'हरि ॐ शांति...' जितना प्रीतिपूर्वक होंठों में जपते जाओगे, जप के अर्थ में शांत होते जाओगे, उतना ही जो हृदय में छुपा बद्रीनाथ भगवान है उसके पट भी खुलने के दिन निकट आ जायेंगे।

इस दिन छाता, मटकी, और भी चीज-वस्तुओं का दान करने का अक्षय फल तो होता है किंतु भगवान का ध्यान, जप करके अपना अहंकार दान करना तो महाराज ! उसका असीम फल होता है । अक्षय तृतीया को जो-जो करो उसका फल अनंत गुना होता है।

बच्चे-बच्चियाँ ! ध्यान देना बेटे ! अक्षय तृतीया के दिन किसी भी इच्छा से तुम जप करोगे तो वह अनंत गुना फल देगा । चाहे भगवान की प्रीति के लिए करो, चाहे भगवान के ज्ञान के लिए करो, चाहे भगवद्रस के लिए करो, चाहे ब्रह्मचर्य पालने के लिए करो, चाहे कुटुम्ब में सुख-शांति के लिए करो... जिसके लिए भी जप करोगे वह फलेगा। ❐



विद्यार्थी संस्कार

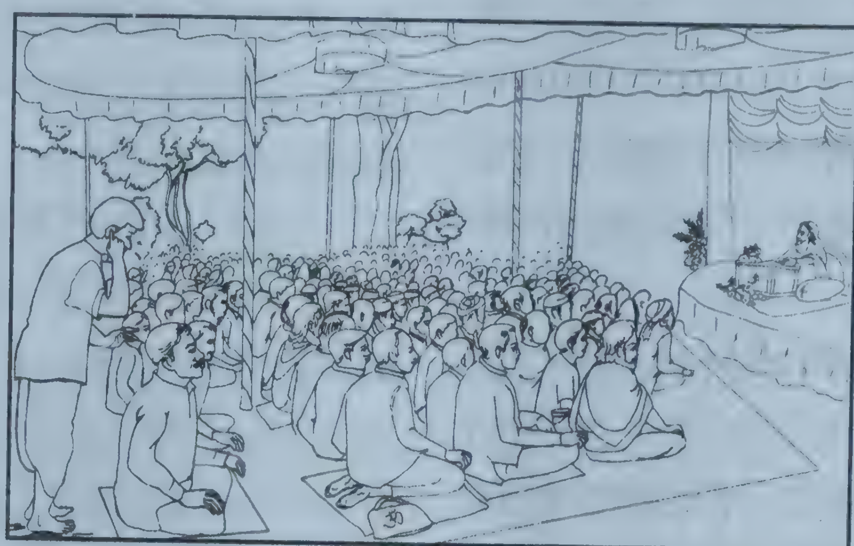


पिता ने मना किया, बेटे को रंग लगा - पूज्य बापूजी

पुराने जमाने की बात होगी। बेटे को बाप ने कहा : ''मैं तो जाता हूँ जरा कथा में, तुम कथा में आना मत और आओ तो कथा सुनना मत।''

बेटे ने कहा : ''क्यों पिताजी ?''

बोले : ''सत्संग में तो महाराज भगवान की कथा, ज्ञान, वैराग्य की कथा करेंगे। कहीं तेरे को रंग लग जायेगा तो फिर तू घर छोड़ के चला जायेगा।''



''पिताजी ! आप इतने वर्षों से जाते हैं, आपको रंग नहीं लगा तो मेरे को कैसे लगेगा ?''

''तू १९ साल का है और मैं हूँ ४३ साल का। मैं चिकना घड़ा हूँ और तू है कोरा घड़ा। मैं हूँ चिकना कपड़ा और तू है कोरा कपड़ा।''

बेटे ने कहा : ''अच्छा, जो आज्ञा।''

महाराज ! दैवयोग से पुरानी वसूली देनेवाला कोई ग्राहक आ गया और उससे कितने पैसे लेने हैं यह तो पिताजी को पता था। बेटे को पिता के पास जाना पड़ा। सोचा, 'पिताजी कथा में बैठे हैं, आवाज करूँ तो उचित नहीं लगता।' 'आओ तो कथा मत सुनना' पिता की इस आज्ञा के अनुसार वह कानों में उँगली डाल के पिता के निकट आया लेकिन एक कान की उँगली निकाल के पिताजी को हिलाया। उस समय कथा चल रही थी श्रीमद्भागवत की। उसमें आया कि 'आत्मस्वरूप भगवान समस्त प्राणियों में आत्मरूप से - नियामकरूप से स्थित हैं। जो कहीं भ न्यूनाधिकता न देखकर सर्वत्र परिपूर्ण भगवत्सत्त को ही देखता है और साथ ही समस्त प्राणी औ समस्त पदार्थ आत्मस्वरूप भगवान में ही आश्रित रूप से अथवा कल्पित रूप से (रस्सी में साँप की तरह) स्थित है अर्थात् वास्तव में भगवत्स्वरूप ही हैं - इस प्रकार का जिसका अनुभव है, ऐसी जिसकी सिद्ध दृष्टि है, उसे भगवान का परम प्रेमी उत्तम भागवत (भक्त) समझना चाहिए।'

(श्रीमद्भागवत : ११.२.४५)

और यह बात सत्य भी है। जिस सत्ता से तुम्हारी आँख देखती है उसी सत्ता से गाय की आँख देखती है, जिस सत्ता से तुम्हारे कान सुनते हैं उसी सत्ता से गाय के कान सुनते हैं, जिस सत्ता से तुम्हारी रक्तवाहिनियाँ काम करती हैं उसी सत्ता से गाय की, घोड़े की रक्तवाहिनियाँ काम करती हैं। तो प्राणिमात्र में चैतन्यरूप वह परमात्मा है। बच्चे ने यह बात सुन ली।

(आगे क्या हुआ, जानने हेतु पढ़ें अगला अंक।)

चार चीजें

चार चीजें पहले दुर्बल दिखती हैं परंतु परवाह न करने से बहुत बढ़कर दुःख के गड्ढे में डाल देती हैं - अग्नि, रोग, ऋण और पाप।

प्रेरक पंक्तियाँ

- पूज्य बापूजी

कभी दुःख आ जाय तो यह बात याद कर लो, मन को कह दो :

दर्द दिल में ही छुपाकर मुस्कराना सीख ले ।
गम के पर्दे में खुशी के गीत गाना सीख ले ॥
तू अगर चाहे तो तेरा गम खुशी हो जायेगा ।
मुस्कराकर गम के काँटों को जलाना सीख ले ॥

भगवत्प्राप्ति के उपाय

प्रश्न : भगवत्प्राप्ति के उपाय क्या हैं ?

श्री उड़िया बाबाजी : भगवन्नाम का स्मरण करना, भगवान और भगवद्भक्तों (संतों) की सेवा करना, भगवद्भक्तों का संग करना, भगवान का गुणानुवाद करना, भगवद्भक्तों की जीवनी पढ़ना, भगवान का ध्यान करना, भगवान का नाम-संकीर्तन करना और भगवान में आसक्ति हो जाना ही भगवत्प्राप्ति के उपाय हैं ।

हिम्मत, भक्ति और पवित्रता के लिए

- पूज्य बापूजी

राम लक्ष्मण जानकी, जय बोलो हनुमान की ।... राम लक्ष्मण जानकी, जय बोलो हनुमान की ।... ऐसा सुबह ५-१० बार बोला करें तो मन में शक्ति, हिम्मत, भक्ति और पवित्रता आने लगती है ।

दुःख नहीं टिकेगा

- पूज्य बापूजी

सारी दुनिया का सब कुछ पा ले, दुःख नहीं मिटेगा और सद्गुरु के ज्ञान की ज्योत से अपनी आत्मज्योत जगा ले तो दुःख नहीं टिकेगा ।

विकारी और संयमी जीवन का परिणाम

- पूज्य बापूजी

जो कामी होता है उसकी स्मृति भी कमजोर होती है, बुद्धि भी कमजोर होती है, मन भी कमजोर होता है और तन भी कमजोर होता है, उसका संकल्प भी कमजोर होता है । और जो संयमी है उसका संकल्प बलवान होता है, शरीर मजबूत होता है, मति दृढ़ होती है, मन मजबूत होता है और उसका निश्चय बहुत सुंदर-सुहावना हुआ करता है । जिसने विद्यार्थी-जीवन में, यौवन-जीवन में अपने ओज-वीर्य की, यौवन की सुरक्षा की है वह चाहे जो संकल्प करे और जो उपलब्धि चाहे, लगा रहे तो देर-सवेर प्राप्त होता है । **ॐ... हरि ॐ... हरि ॐ... ॐ... ॐ...**

विपत्ति और सम्पत्ति

वास्तविक विपदा और वास्तविक सम्पदा क्या है ? शास्त्रों में आता है :

विपदो नैव विपदः सम्पदो नैव सम्पदः ।
विपद्विस्मरणं विष्णोः सम्पन्नारायणस्मृतिः ॥

'विपत्ति यथार्थ में विपत्ति नहीं है, सम्पत्ति भी सम्पत्ति नहीं है । वस्तुतः व्यापक परमात्मा का विस्मरण होना ही विपत्ति है और उनका स्मरण रहना ही सम्पत्ति है ।'

श्री रामचरितमानस (सुं.कां. : ३१.२) में आता है :

कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई ।
जब तव सुमिरन भजन न होई ॥

वास्तव में वे घड़ियाँ विपत्ति की हैं जब परमात्मा का भजन और सुमिरन नहीं होता और वे घड़ियाँ सम्पदा की हैं, वे दिन सुहावने हैं जिनमें परमात्मा का भजन और सुमिरन होता है । ❐

प्रेम को किसमें लगायें ?

- पूज्य बापूजी

संत कबीरजी ने कहा है :

जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान ।
जैसे खाल लुहार की, साँस लेत बिन प्रान ॥

गुरु गोविंदसिंहजी कहते हैं :

साचु कहौ सुन लेहु सभै
जिन प्रेमु किओ तिन ही प्रभु पायो ॥

जिसने प्रेम किया उसीने पिया को, प्रभु को पाया । अकड़ या कायदे-कानून से नहीं कि 'मैं इतनी माला घुमाऊँगा तो तू आयेगा... मैं इतने यज्ञ करूँगा तो तू मिलेगा...' नहीं । 'मुझमें कुछ करने का सामर्थ्य है ही कहाँ ? जो भी तू करवाता है, वह तेरी ही कृपा है । बस, मैं तेरा हूँ - तू मेरा है और मैंने तुझे कहीं देखा है !' ऐसा करते-करते उसके साथ दिल मिलाते जाओ, बस... संसार के तनाव छू हो जायेंगे, रोग-चिंता-मोह का प्रभाव क्षीण होता जायेगा, मुसीबतें भागना शुरू हो जायेगा ।

प्रेम जब इष्टदेव से होता है तो उस देव के दैवी गुण प्रेमी में आने लगते हैं । आप किसी दुष्ट व्यक्ति से प्रेम करते हैं तो उसके अवगुण आपमें आने लगते हैं, सज्जन से प्रेम करते हैं तो उसके सद्‌गुण आने लगते हैं । वही प्रेम जब आप परमात्मा से करोगे तो आपमें कितने उच्च सद्‌गुणों का समावेश होगा यह आप ही सोचो भैया !... और वही प्रेम यदि परमात्मा को पाये हुए किन्हीं ब्रह्मवेत्ता महापुरुष से होगा तो आपका जीवन निहाल हो जायेगा ।

प्रेम का आशय आप कहीं फिल्मोंवाले प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम न समझ लेना । फिल्मोंवाले तो प्रेम को बदनाम करते हैं, काम-विकार है वह । सच्चा प्रेम तो सद्‌गुरु के चरणों में सत्‌शिष्य का होता है, भक्त का भगवान में होता है ।

महापुरुषों के प्रति हृदयपूर्वक प्रेम हो जाता है तो हृदय पवित्र होने लगता है, उनके सद्‌गुण हममें आने लगते हैं व हमारे दोष मिटने लगते हैं । अतः आप गुणनिधि ईश्वर और ईश्वरप्राप्त महापुरुषों से प्रेम किया करें । श्रीमद्‌भागवत (३.२५.२०) में कपिल मुनि माता देवहूति से कहते हैं :



प्रसङ्गमजरं पाशमात्मनः
कवयो विदुः ।
स एव साधुषु कृतो
मोक्षद्वारमपावृतम् ॥

'विवेकीजन संग या आसक्ति को ही आत्मा का अच्छेद्य बंधन मानते हैं किंतु वही संग या आसक्ति जब संतों-महापुरुषों के प्रति हो जाती है तो मोक्ष का खुला द्वार बन जाती है ।'

पाश्चात्य जगत में बड़ा व्यक्ति उसे मानते हैं जिसके पास अपने जहाज हैं, बँगले हैं, गाड़ियाँ हैं, करोड़ों डॉलर हैं किंतु भारत में उसे बड़ा मानते हैं जिसके हृदय में परमात्म-प्रेम है । जो लेता तो बहुत कम अथवा कुछ भी नहीं लेकिन देता बहुत है । राजा जनक अष्टावक्रजी को बड़ा मानते हैं और श्रीरामचन्द्रजी वसिष्ठजी को गुरु मानते हैं, बड़ा मानते हैं । जिसके भी हृदय में आत्मिक प्रेम है उसको भारत ने बड़ा माना है । राजा परीक्षित ने शुकदेवजी के चरणों में बैठकर परमात्म-प्रेम का ऐसा प्रसाद एवं परम निर्भयता प्राप्त की कि तक्षक काटने आ रहा है फिर भी मौत का भय नहीं । परीक्षित कहते हैं : ''मौत तो मरनेवाले शरीर को मारती है, मुझ अमर आत्मा का क्या बिगड़ता है ?'' →

सच्चा सौंदर्य क्या ?

महिला उत्थान

भारत की जो माताएँ-बहनें पाश्चात्य रंग-रोगन व फैशन-प्रधान जीवनशैली का अनुसरण करने में गौरव मानती हैं उन्हें अब इस भुलावे से बाहर आ जाना चाहिए । फैशनेबल वस्त्र पहनने से वास्तविक सुख-सौंदर्य का कोई संबंध नहीं है, **सच्ची सुंदरता तो व्यक्ति का उज्ज्वल चरित्र है ।** ब्रह्मवेत्ता सद्गुरु का आदर, इन्द्रियों का संयम, मधुर भाषण, ब्रह्मचर्य, उच्च विचार, सदाचार, प्रभुप्रीति जैसे सद्गुणों से सुशोभित व्यक्ति ही सच्चा सौंदर्यवान है ।

श्री हनुमान प्रसाद पोद्दारजी कहते हैं : ''जिस सुंदरता के साथ हमारे चरित्र की पवित्रता, भावों की विशुद्धि और आचरण की शुचिता है वही सुंदरता वास्तविक है । शेष समस्त सौंदर्य यथार्थतः वैसा ही है जैसा जहर से भरा चमकता हुआ स्वर्ण-कलश। इस भयानक सुंदरता से अपने को बचाओ और इसीलिए बाहरी रूप-रंग, वेशभूषा, साज-शृंगार के चक्कर में न पड़कर विचारों, भावों और गुणों को सुंदर बनाओ तथा उन्हींके अनुसार अपनी क्रिया को सुंदर बनाओ । इससे शरीर, मन व बुद्धि स्वस्थ होंगे । इसीसे अपने में ही स्थित आत्मा के शुभ दर्शन होंगे (अनुभव होगा) ।''

पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है : ''जिससे हाड़-मांस का शरीर सुंदर दिखता है, ऐसे परम सुंदर परमात्मा को छोड़कर जो शरीर की सुंदरता के पीछे लगा है उस जैसा अभागा और कौन हो सकता है ? नश्वर चीजें प्यारी और आकर्षक लगती हैं, उनको सुंदरता देनेवाला वह चैतन्य आत्मा है । उसके सौंदर्य को छोड़कर जो चीजों के सौंदर्य में लगता है वह अभागा है ।

सुनहु उमा ते लोग अभागी ।
हरि तजि होहिं बिषय अनुरागी ॥''

(श्री रामचरित. अर.कां. : ३२.२) ❒

सच्ची सेवा क्या है ? **केवल दुःख मिटाना सच्ची सेवा नहीं है, सुख बाँटना, प्रेम बाँटना ही सच्ची सेवा है ।** तुमने किसी दुःखी व्यक्ति का फोड़ा ठीक कर दुःख मिटाया तो वह सेवा तो है परंतु पक्की सेवा नहीं क्योंकि फोड़ा ठीक होते ही वह शराब पियेगा या नश्वर संसार से सुख लेने के लिए और कुछ करेगा लेकिन उसके जीवन में तुमने सत्संग का प्रेम दे दिया तो शराबवाले की शराब छूट जायेगी, रोगी को रोग में राहत मिलेगी... उसे परमात्मा का प्रेम जो दान कर दिया है ! जो लोग ऐसी सेवा करते हैं अथवा ऐसी सेवा के दैवी कार्य में भागीदार बनते हैं, वे हजारों-हजारों यज्ञों से भी बड़ा काम करते हैं ।

हरि सम जग कछु वस्तु नहीं, प्रेम पंथ सम पंथ ।
सद्गुरु सम सज्जन नहीं, गीता सम नहिं ग्रंथ ॥

...तो आज से ही पक्का कर लो कि हम उस प्यारे से प्यार करेंगे, मुहब्बत करेंगे ।

मुहब्बत के जो बंदे होते हैं
वो कब फरियाद करते हैं ।
लबों पर मोहर खामोशी की
और दिलों में उसे याद करते हैं ॥

प्रेम के बिना तपस्या रूखी, प्रेम के बिना धन रूखा, प्रेम के बिना तन और जीवन भी रूखा होता है । प्रेम जब शरीर में फँसता है तो 'काम' बनता है, प्रेम जब धन में उलझता है तो 'लोभ' बनता है, प्रेम जब परिवार में मँडराता है तो 'मोह' बनता है और प्रेम जब ईश्वर में या ईश्वरप्राप्त महापुरुषों में लगता है तो मुक्तिदायी बनता है । ❒

इन्द्रियगत ज्ञान का आदर करने से व्यक्ति अल्पमति हो जाता है।

गुरुकुल शिक्षा-पद्धति की आवश्यकता क्यों ?

पिछले अंक से आगे

- पूज्य बापूजी

यह व्यवस्था गुरुकुलों में होती थी

पिछले सैकड़ों-हजारों वर्षों में कोई व्यक्ति ऐसा कोई ग्रंथ नहीं बना पाया जो श्रीकृष्ण की गीता की बराबरी कर सके। ऐसी कोई रचना बनी हो जो रामायण एवं उपनिषदों-पुराणों की बराबरी कर सके ऐसा हमने-आपने देखा-सुना नहीं। तो आज के व्यक्ति की मति बहुत नीचे चली गयी है। पक्षी खा-पी के, किलोल करके तथा जीव-जंतु व पशु खा-पी के, रेंग-राँग के जीवन पूरा कर देते हैं परंतु मनुष्य खाता-पीता भी है, घूमता भी है और किलोल भी करता है लेकिन उससे भी बढ़कर मनुष्य-जीवन में सम्भावना यह है कि वह सृष्टिकर्ता के अथाह खजाने को, अथाह आनंद, ज्ञान, सामर्थ्य व अथाह माधुर्य को प्राप्त कर ले, यहाँ तक कि खुद को पहचानकर सृष्टिकर्ता के साथ एक हो जाने की योग्यता भी मनुष्य में बीजरूप में पड़ी है। जैसे बीज को धरती और खाद-पानी मिले तो वह वृक्ष हो जाता है ऐसे ही मनुष्य को सद्गुरु, शास्त्र और साधना मिले तो वह ब्रह्म हो जाता है।

शिक्षा-पद्धति

हम पेटपालू द्विपाद पशु न रह जायें बल्कि मन से भगवान से अपनत्व का संबंध जोड़कर मनुष्य बनें। मानव, मानव में से महामानव बन सकता है, देवों के देव परम देव परब्रह्म-परमात्मा, जिसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश, जगदम्बा आदि स्थित हैं, उसमें स्थित हो सकता है।

मनुष्य-जीवन में इतनी सारी सम्भावनाएँ हैं, अथाह शक्ति, आनंद, माधुर्य, सामर्थ्य आदि भरा पड़ा है; उसको जगाना, खोलना, पाना - यह व्यवस्था पहले गुरुकुलों में होती थी। १०-१० हजार छात्र एक गुरुकुल में, ऋषि-आश्रम में एक साथ पढ़ते थे। चाहे राजकुमार हो, चाहे सामान्य या कंगाल व्यक्ति के घर का बालक हो - सबको सामूहिक जीवन जीने का और तितिक्षा सहने का अवसर मिलता था तो विद्यार्थी परिपक्व होकर समाज में आते थे। अभी तो विद्यालयों-महाविद्यालयों में जरा गर्मी हुई तो पंखे चल गये, परदेश में ए.सी. चल गया। जरा कड़क पढ़ाई हुई तो लड़कों ने एक होकर मास्टर की पिटाई कर दी... तो जीवन उच्छृंखल हो गया। परमेश्वर को पाने की क्षमताएँ, योग्यताएँ जिन आश्रमों में, गुरुकुलों में विकसित होती थीं वे गुरुकुल अब नहीं के बराबर हो गये।

बुराई छोड़ने से ही संकल्पशक्ति पवित्र होती है। गुरुकुलों में पहले बुराई छुड़ाकर विद्यार्थियों की संकल्पशक्ति विकसित कर देते थे। अभी रट-रट के या देख-देख के (नकल करके) परीक्षा दे दी जाती है और नौकरी के लिए रिश्वत दे देते हैं। फिर नौकरी करके जनता से खूब पैसे ले के मजा मारने गये तो (अत्यधिक भोग से) बीमारियाँ हो गयीं। इससे समाज में दुःख बढ़ रहा है, झगड़े करना-कराना... विघटन में शक्ति का ह्रास हो रहा है। एक-दूसरे को मदद करके शक्ति का, संकल्प का सदुपयोग करें। सभी व्यक्तियों का मंगल, यहाँ तक कि पशु-पक्षियों व वृक्षों का - सभीका मंगल चाहती है भारतीय संस्कृति।

(क्रमशः) ❑

तत्त्व दर्शन

देहत्रय-साक्षी विवेक

(पिछले अंक में आपने पढ़ा कि विचार के लिए देह के ३ विभाग किये गये - स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर, जिनमें से आपने स्थूल शरीर का कुछ विवेचन पढ़ा। शेष आगे...)

स्थूल शरीर का विवेक

पंचभूतों में स्थूल आकृतियों का भेद क्यों हुआ ? इसका कारण इस शरीर में रहनेवाले कर्ता-भोक्ता जीवात्मा का पूर्वकृत कर्म-संस्कार है। जैसे लौह-चूर्ण के कणों को चुम्बक अपनी शक्ति आदि के अनुसार अपने साथ चिपका लेता है, उसी प्रकार पंचमहाभूतों को जीवात्मा अपनी वासनाओं के अनुसार अपने साथ सम्बद्ध कर लेता है।

यह स्थूल शरीर जीवात्मा का भोगायतन (भोग का आश्रय) है। जैसे गृहस्थ घर में रहता है वैसे ही जीवात्मा इस स्थूल शरीर में रहता है। जैसे घर ईंट, पत्थर, लोहा, सीमेंट, लकड़ी से बना होता है और इसलिए उन्हींका है, गृहस्थ केवल व्यवहार के लिए उसे 'मेरा' कहता है, उसी प्रकार यह स्थूल शरीर पंचमहाभूतों से बना है अतः उन्हींका है, जीवात्मा को तो भोगायतन होने के कारण इसको व्यवहारतः 'मेरा' कहना चाहिए। 'मैं' तो यह है ही नहीं। जब यह शरीर हमारा कहना नहीं मानता, इसका ह्रास-विकास हमारी इच्छा के अनुसार नहीं होता अपितु पंचभूतों के नियमों के अनुसार चलता है, तब यह शरीर 'मेरा' कैसे ? यह तो पाँच भूतों का ही है। जो वस्तु जिसकी हो उसको सुपुर्द कर देनी चाहिए।

२५ तत्त्वों का संघात (समूह) यह स्थूल शरीर 'मैं' नहीं हो सकता क्योंकि संघात किसी दूसरे के लिए होता है : **सङ्घातस्य परार्थत्वात्।** यह शरीर आत्मा के लिए है किंतु आत्मा नहीं है।

स्थूल शरीर का न कोई एक अवयव आत्मा (मैं) है और न सब मिलकर आत्मा है। आत्मा तो स्थूल, सूक्ष्म, कारण - तीनों देहों का ज्ञानस्वरूप साक्षी है। कर्ता, भोक्ता, संसारी और परिच्छिन्न (सीमित) जो जीवात्मा है वह भी सूक्ष्म शरीर और कारण शरीरवाला ही है, कारण कि जन्मांतर में स्थूल शरीर तो यहीं रह जाता है और सूक्ष्म व कारण शरीर को ही साथ लेकर जीवात्मा देहांतरण को प्राप्त होता है।

विचारक को चाहिए कि वह प्रकृति-पुरुष के विचारपूर्वक स्थूल शरीर और उसके धर्मों से अपने को पृथक् एवं उनके भाव-अभाव का साक्षी अनुभव करे। अनुभव का सूत्र यही है कि जो दृश्य है, ज्ञेय (जानने में आनेवाला) है, वह असत्-जड़-दुःखरूप है अतः वह अनात्मा है (मैं नहीं हैं) और जो द्रष्टा है, ज्ञाता है, साक्षी है, वह सत्-चित्-आनंदरूप है अतः वही आत्मा है (मैं हूँ)। मैं सबके भाव-अभाव का साक्षी हूँ अतः मैं शुद्ध ज्ञानस्वरूप हूँ।

स्थूल शरीर दृश्य है अतः जड़ है। इसके ६ भाव-विकार हैं : उत्पन्न होना **(जायते)**, उत्पन्न होकर अस्तित्व में आना **(अस्ति)**, बाल, युवा, वृद्ध आदि परिणाम को प्राप्त होना **(विपरिणमते)**, बढ़ना **(वर्धते)**, वृद्ध होकर क्षयी होना **(अपक्षीयते)** और अंत में मर जाना **(विनश्यति)**। आत्मा इन ६ भाव-विकारों का साक्षी है। वह उत्पन्न नहीं होता, उत्पत्ति का साक्षी है अतः उत्पत्ति से पूर्व विराजमान है।

(शेष पृष्ठ २५ पर)

बालक के चरित्र ने पिता को किया विस्मित

(पिछले अंक में आपने पढ़ा कि भद्रशील ने अपने पिता गालव मुनि को बताया कि वह पूर्वजन्म में धर्मभ्रष्ट राजा धर्मकीर्ति था लेकिन उसके मरने के बाद यमपुरी में जब चित्रगुप्त के मुख से धर्मकीर्ति के अंत समय में उसके सत्संग व एकादशी व्रत करने के पुण्य-प्रभाव की बात यमराज ने सुनी तो उन्होंने धर्मकीर्ति को साष्टांग दंडवत् प्रणाम करते हुए उसकी पूजा की। अब आगे...)

यमदूत किसके पास नहीं आते ?

भगवद्भक्त भद्रशील आगे बताते हैं : ''तदनंतर धर्मराज ने अपने सब दूतों को बुलाकर कहा : ''दूतो ! मेरी बात सुनो । मैं तुम्हारे हित की बड़ी उत्तम बात बतलाता हूँ। धर्म-मार्ग में लगे हुए मनुष्यों को मेरे पास न लाया करो। जो भगवान



के पूजन, भजन में तत्पर, संयमी, कृतज्ञ, एकादशी व्रतपरायण तथा जितेन्द्रिय हैं और जो 'हे नारायण ! हे अच्युत ! हे हरे ! मुझे शरण दीजिये...' इस प्रकार शांत भाव से निरंतर भगवन्नाम जपते रहते हैं, ऐसे लोगों को तुम तुरंत छोड़ देना । जो सम्पूर्ण लोकों के हितैषी तथा परम शांत भाव से रहनेवाले हैं और नित्य कीर्तन किया करते हैं, उन्हें दूर से ही त्याग दिया करो। उन पर मेरा शासन नहीं चलता। जो अपने सम्पूर्ण कर्म भगवान को समर्पित कर देते हैं, उन्हींके भजन में लगे रहते हैं, अपने वर्णाश्रमोचित आचार के मार्ग में स्थित हैं, गुरुजनों की सेवा किया करते हैं, सत्पात्र को दान देते, दीनों की रक्षा करते और निरंतर भगवन्नाम जप-कीर्तन में संलग्न रहते हैं, उनको भी छोड़ देना । जो पाखंडियों के संग से रहित, ब्राह्मणों (ब्रह्मवेत्ता संतों) के प्रति भक्ति रखनेवाले, सत्संग के लोभी, अतिथि-सत्कार के प्रेमी, भगवान शिव और विष्णु में समता रखनेवाले तथा लोगों के उपकार में तत्पर हों, उन्हें छोड़ दिया करो।

मेरे दूतो ! जो लोग भगवान की कथारूप अमृत के सेवन से वंचित हैं, भगवान के चिंतन में मन लगाये रखनेवाले साधु-महात्माओं से जो दूर रहते हैं, उन पापियों को ही मेरे घर पर लाया करो। जो माता और पिता को डाँटनेवाले, लोगों से द्वेष रखनेवाले, हितैषीजनों का भी अहित करनेवाले, देवता की सम्पत्ति के लोभी, दूसरे लोगों का नाश करनेवाले तथा सदैव दूसरों के प्रति अपराध में ही तत्पर रहनेवाले हैं, उनको यहाँ पकड़कर लाओ। जो एकादशी व्रत से विमुख, क्रूर स्वभाववाले, लोगों को कलंक लगानेवाले, परनिंदा में तत्पर, ग्राम का विनाश करनेवाले, श्रेष्ठ पुरुषों से वैर रखनेवाले तथा भूदेवों के धन का लोभ करनेवाले हैं, उनको यहाँ ले आओ। जो भगवान की भक्ति से मुँह मोड़ चुके हैं उन अतिशय पाप में रत रहनेवाले दुष्ट लोगों को ही तुम बलपूर्वक पकड़कर यहाँ ले आओ।''

उन्हें निश्चय ही भगवद्धाम प्राप्त होता है

इस प्रकार जब मैंने यमराज की बातें सुनीं

तो पश्चात्तापपूर्वक अपने किये हुए निंदित कर्मों का स्मरण किया । पापकर्म के लिए पश्चात्ताप और श्रेष्ठ धर्म का श्रवण करने से मेरे सब पाप वहीं नष्ट हो गये । उसके बाद में उस पुण्यकर्म के प्रभाव से इन्द्रलोक में गया । वहाँ पर मैं सब प्रकार के भोगों से सम्पन्न रहा । सम्पूर्ण देवता मुझे नमस्कार करते थे । बहुत काल तक स्वर्ग में रहकर फिर वहाँ से मैं भूलोक में आया । यहाँ भी आप जैसे भगवद्भक्त के कुल में मेरा जन्म हुआ । सत्संग और एकादशी व्रत का ऐसा माहात्म्य है यह पूर्वजन्म में मैं नहीं जान सका था, इस समय पूर्वजन्म की स्मृति के प्रभाव से जान लिया है । पहले विवश होकर भी जो सत्संगियों का संग व व्रत किया गया था उसका यह फल मिला है । प्रभो ! फिर जो भक्तिपूर्वक सत्संग, भजन, जप आदि करते हुए एकादशी व्रत करते हैं उनको क्या नहीं मिल सकता ! अतः हे विप्रेन्द्र ! मैं शुभ एकादशी व्रत का पालन तथा प्रतिदिन भगवान की पूजा, ध्यान, जप, सत्कर्म भगवान के परम धाम को पाने की आकांक्षा से ही करूँगा । जो मनुष्य श्रद्धापूर्वक भगवद्भजन, सत्संग व एकादशी व्रत करते हैं उन्हें निश्चय ही परमानंददायक भगवद्धाम प्राप्त होता है ।''

अपने पुत्र का ऐसा वचन सुनकर गालव मुनि बहुत प्रसन्न हुए और बोले : ''वत्स ! मेरा जन्म सफल हो गया । मेरा कुल भी पवित्र हो गया क्योंकि तुम्हारे जैसा भगवद्भक्त मेरे घर में पैदा हुआ है ।'' ❒

अमृतबिंदु - पूज्य बापूजी

कलियुग में हरि का गुणगान सुनने, गाने और उसका नाम-सुमिरन करते-करते विश्रांति पाने से व्यक्ति भवसागर से पार हो जाता है ।

...तो मन स्वतः परमात्मा में लग जायेगा



एक बार स्वामी शरणानंदजी को गीता भवन, ऋषिकेश के ट्रस्टी महोदय ने कहा : ''महाराज ! पिछले १५ वर्षों से मेरा यह नियम है कि मैं प्रतिदिन एक लाख भगवन्नाम-जप करता हूँ, उसके पश्चात् ही अन्न-जल ग्रहण करता हूँ फिर भी अभी तक मेरा मन भगवान में नहीं लग पाया ।''

शरणानंदजी ने तुरंत कहा : ''आपका मन भगवान में नहीं लग सकता ।''

ट्रस्टी महोदय आश्चर्यचकित होकर उनकी ओर देखने लगे । उन्होंने पूछा : ''महाराज ! मेरी बात से नाराज हो गये क्या ?''

''नहीं, मैं नाराज नहीं हूँ, मेरी बात समझो । मैं यह कहता हूँ कि जब सब कुछ परमात्मा का है तो मन तुम्हारा कैसे हो गया ? यदि परमात्मा को तुम अपना मान लो, उनसे संबंध जोड़ लो तो तुम्हारा मन स्वतः परमात्मा में लग जायेगा । अपना मानकर हम मन को कभी स्थिर नहीं कर सकते और न परमात्मा में लगा सकते हैं ।'' ❒

(पृष्ठ २३ से 'देहत्रय-साक्षी विवेक' का शेष)

वह शरीर के वर्धन, परिणाम, क्षय और विनाश का साक्षी है अतः वह सर्वकाल में है ।

जैसे घट का द्रष्टा घट से पृथक् है, उसी प्रकार स्थूल शरीर का द्रष्टा स्थूल शरीर से पृथक् है ।

इस स्थूल शरीर और इसकी जाग्रत अवस्था का जो अभिमानी है उसको 'विश्व' कहते हैं । किंतु आत्मा विश्व से भी विलक्षण है । स्थूल शरीर क्रिया-भोग प्रधान है अतः इसकी शक्ति रजोगुण है ।

(क्रमशः) ❒

संतों की हितभरी अनुभव-वाणी



बुरे वचन से कैसे बचें ?

– संत रज्जबजी

बुरे वचन पत्थर तथा बाण के समान होते हैं। पत्थर और बाणों से देह को हाथ और गैंडे की ढाल मिलकर बचाते हैं, वैसे ही बुरे वचनों की चोट सावधान साधक विवेक और ज्ञान के द्वारा बचाते हैं।

मन भगवत्स्वरूप कब होता है ?



– श्री हरिबाबाजी

सभी भले-बुरे कर्म मन ही के द्वारा होते हैं। यदि यह मन भगवान को अर्पण कर दिया जाय तो मन, मन न रहकर भगवत्स्वरूप ही हो जाता है।

हे हरि ! मुझे सद्गुरु से मिलाओ



– गुरु रामदासजी

हे हरि ! मुझे सद्गुरु से मिलाओ क्योंकि मुझे सद्गुरु के चरण प्रिय लगे हैं। जब सद्गुरु ने मुझे अंतरात्मा राम का ज्ञानरूपी अंजन लगाया तो अज्ञानरूपी अंधकार दूर हो गया। सद्गुरु की सेवा करने से मैंने ऐसा परम पद पाया है कि अब मैं साँस लेते हुए और प्रत्येक ग्रास खाते हुए भी (अखंड रूप से) हरि का जप करता हूँ। जिन पर हरि प्रभु ने कृपा की है उन्हें सद्गुरु की सेवा में लगाया है। हे हरि ! मुझे सद्गुरु से, केवल सद्गुरु से मिलाओ क्योंकि मुझे सद्गुरु के चरण प्रिय लगते हैं।

गतांक की 'ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी' के उत्तर

(१) अहंकार (२) आत्मा-परमात्मा (३) गुरु

ब्रह्मचर्य-व्रत और उत्तम ध्यान हेतु...

– महावीर स्वामी

(महावीर स्वामी जयंती : २५ अप्रैल)



स्त्रियों को रागपूर्वक देखना, उनकी अभिलाषा करना, उनका चिंतन करना, कीर्तन (यश-वर्णन, गुण-कथन) करना आदि कार्य ब्रह्मचारी पुरुष को कदापि नहीं करने चाहिए। ब्रह्मचर्य-व्रत में सदा रत रहने की इच्छा रखनेवाले पुरुषों के लिए यह नियम अत्यंत हितकर है और उत्तम ध्यान प्राप्त करने में सहायक है।

उपकार ही सबका काज



– संत तुकारामजी

जो स्वयं तर जाते हैं उनकी कौन-सी बड़ाई है ? जो दूसरों का भला करते हैं उनका ही नाम लेना चाहिए। पृथ्वी इतना भार क्यों धारण करती है ? गाय दूसरों को दूध देती है लेकिन स्वयं दूध को चखकर देखती तक नहीं है। मेघ बरसते हैं, वृक्ष फल देते हैं। इनमें वे अपना कौन-सा लाभ देखते हैं ? चन्द्र और सूर्य एक क्षण बैठे बिना चक्कर क्यों लगाते हैं ? पारस लोहे को सोना क्यों करता है ? पारस स्वयं सोना नहीं बनता तो भी उसकी कीमत कम नहीं होती है।

कहे तुका उपकार हि काज।
सब कर रहिया रघुराज ॥

उपकार करना ही सबका कार्य है। वास्तव में तो सब कुछ करनेवाले भगवान ही हैं। (अतः शास्त्र व संत सम्मत परोपकार करते हुए भी अपने को उसका कर्ता नहीं मानना चाहिए।)

ध्यान में उपयोगी महत्त्वपूर्ण १२ योग

(पिछले अंक में आपने ध्यान में उपयोगी प्रथम योग - देशयोग के बारे में पढ़ा। अन्य योगों के बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग में वर्णन आता है :)

(२) कर्मयोग : आहार, विहार, चेष्टा, सोना और जागना - यह सब परिमित और नियमानुकूल होना चाहिए। यही 'कर्म' नामक योग है। जो भी चेष्टा करें, जो भी कर्म करें वे योग के पोषक होने चाहिए, न कि योग को बिखेरनेवाले। ध्यानयोग के द्वारा जो भी अनुभव हो उसे यत्र-तत्र प्रकाशित न करें और न ही प्रलोभन आदि में फँसें।



ध्यान के साधक को कई बार अद्भुत प्रकाश दिखता है। कभी अपने को आकाश में उड़ता हुआ देखता है तो कभी-कभी जो होनेवाला है उसकी स्फुरणा हो जाती है। इस प्रकार साधक को अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार अलग-अलग ढंग से अनुभव होते रहते हैं।

एक बार अहमदाबाद आश्रम के मौन-मंदिर में एक तहसीलदार बैठा था। साधना के दौरान उसके पास तीन बार अप्सरा आयी थी। दो बार तो रूप-लावण्य से सज-धजकर उसे आकर्षित करने आयी थी लेकिन उसको हमने समझा रखा था कि 'यह सब होगा किंतु तुम फँसना नहीं।' तीसरी बार आकर वह कुर्सी पर बैठी। उस वक्त उसके शरीर पर केवल चमड़ा नहीं था बाकी का सब मसाला दिखे ऐसी हालत में थी। वह साधक से कहने लगी : 'फँसता तो यही था इस शरीर में।' ऐसा कहकर वह अंतर्धान हो गयी। यह सब सम्भव है।

ऐसे अनुभव हमें भी हों ऐसी इच्छा न करें और यह नहीं हो सकता ऐसी शंका भी न करें। आप केवल लगे रहें तो इससे भी ऊँचे अनुभव हो सकते हैं।

(३) अनुराग योग : भगवान में प्रीति हो। भगवान में, भगवान की प्राप्ति के साधन - ध्यान, जप, सत्संग आदि में प्रीति हो, भगवान के गुण-महिमा सुनने में प्रीति हो, इसे कहते हैं 'अनुराग योग'। सतत भगवन्नाम-जप करने से भगवान में प्रीति होगी। भगवान में अनुराग होगा तो काम-विकार शांत हो जायेगा। लोभ, मोह, मद, मत्सर (ईर्ष्या, द्वेष), अहंकार आदि दुर्गुण दूर हो जायेंगे। भगवान में प्रीति नहीं है इसलिए सारी मुसीबतें आती हैं।

भूल्या जभी आपनूँ तभी हुआ खराब।

अगर यह अनुराग योग मिल गया तो बाकी के तमाम विघ्नों पर तुम सहजता से विजय पा सकोगे और योग में सफलता मिल जायेगी। प्रकृति के ऐसे-ऐसे रहस्य खुलने लगेंगे कि तुम आश्चर्य करोगे कि 'आज तक हम कहाँ भटक रहे थे!' ऐसा है अनुराग योग। (क्रमशः) ❐

अमृतबिंदु

- पूज्य बापूजी

भगवान को अपना और अपने को भगवान का मानने से भगवान में प्रीति होती है, मन भगवान में जल्दी लगता है।

विश्व महिला दिवस पर

देश-विदेश में गूँजी आवाज 'निर्दोष बापूजी को रिहा करो !'

विश्व महिला दिवस (८ मार्च) महिलाओं की उन्नति के लिए चिंतन-मंथन का दिवस है और इस दिन विश्वभर के महिला संगठन इसी उद्देश्य से अपनी-अपनी विचारधारा के अनुरूप कार्यक्रम करते हैं। इन संगठनों में पूज्य संत श्री आशारामजी बापू द्वारा स्थापित महिला उत्थान मंडल वह संगठन है जो महिलाओं की बाहरी एवं आंतरिक सूक्ष्म शक्तियों की जागृति अर्थात् उनकी सर्वांगीण उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है एवं सक्रियरूप से उस पर चलने की कला सिखाता है। विश्व महिला दिवस पर मंडल द्वारा विभिन्न सत्प्रवृत्तियाँ की गयीं।

नारी के बारे में पाश्चात्य मान्यता एवं भारतीय चिंतन क्या है यह स्पष्ट करते हुए स्वामी विवेकानंदजी ने कहा है : ''पश्चिम (पाश्चात्य देशों) में महिला एक पत्नी है। वहाँ नारीत्व का विचार 'पत्नी' के रूप में केन्द्रित है। भारत के सामान्य नागरिक के लिए नारीत्व का पूरा बल 'मातृत्व' पर केन्द्रित है।''

पाश्चात्य विचारधारा नारी को मात्र भोग्या (भोग की एक वस्तु) मानती है और पाश्चात्य शिक्षा-पद्धति भी नारियों को ऐसी ही शिक्षा देती है जिससे उन्हें भोग्या होने में ही गौरव महसूस हो। पाश्चात्य देशों से यह विचारधारा भारत में भी प्रवेश कर जड़ें जमाती जा रही थी। उसे रोकने एवं पुनः अपनी पवित्र संस्कृति की ओर मोड़ने का महान कार्य किया गया है पूज्य बापूजी एवं महिला उत्थान मंडल द्वारा। महिला उत्थान मंडल महिलाओं को भारतीय संस्कृतिरूपी वह आईना दिखा रहा है जो उन्हें अपनी उज्ज्वल, तेजोमयी गरिमा दिखाने में सक्षम है।

नारी के बारे में भारतीय संस्कृति के संरक्षक-पोषक पूज्य बापूजी की ज्ञानधारा यह उद्घोष करती है कि ''**नारी ! तू नारायणी... जाग हे कल्याणी !**''

पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है : ''**नारी अबला नहीं, सबला है। भारत की नारी भोग्या, कठपुतली नहीं है, वह तो भगवान की सुपुत्री है। नारी तो नारायणी है। हिन्दुस्तान की बेटियो ! संयमी, साहसी बनो। तुम भोग्या नहीं हो, योग्या (परमात्मा से योग करनेवाली) हो। तुच्छ चीजों में जीवन बरबाद न करते हुए उसे ब्रह्मज्ञान के सत्संग तथा भगवान की आराधना-उपासना, जप-तप, साधना में लगाओ तो तुम भी आत्मपद में आरूढ़ हो सकती हो।**''

हमारे देश एवं संस्कृति में अवतरित पूज्य बापूजी, ऋषि-मुनि एवं अन्य ब्रह्मवेत्ता संतों की यह चिंतनधारा एवं इसके ज्ञानप्रकाश में आयोजित महिला उत्थान के प्रकल्प ही नारी की सर्वांगीण उन्नति करने में सक्षम हैं। ऐसी अपनी संस्कृति के सुदृढ़ प्रहरी पूज्य बापूजी को आज उनके जीवन एवं जीवनकार्यों के सर्वथा विपरीत, आधारहीन, अनर्गल मामला खड़ा करके समाज से दूर रखा गया है। महिलाओं के उत्थान में यह एक भीषण अवरोध उपस्थित हुआ है। इस सच्चाई को महिला उत्थान मंडल ने इस दिन अनेक प्रकार से उजागर किया।

देशभर में अनेकानेक स्थानों पर राष्ट्रपति के नाम संबंधित अधिकारियों को ज्ञापन सौंपे गये। कई स्थानों पर धरना-प्रदर्शन →

पाँच महाव्रत

- पूज्य बापूजी

जिसके जीवन में पाँच महाव्रत आ जायें उसको तो न चाहने पर भी भगवान मिल जायेंगे । भगवान की इच्छा न हो तब भी भगवत्साक्षात्कार हो जायेगा ।

(१) अहिंसा : किसीको मारें नहीं ।

(२) सत्य : झूठ न बोलें ।

(३) अस्तेय : चोरी न करें ।

(४) ब्रह्मचर्य

(५) अपरिग्रह : (अनावश्यक) संग्रह न करें ।

ये पाँच महाव्रत हैं । इनको धारण करनेवाला व्यक्ति न चाहे तब भी महान आत्मा हो जायेगा, सुप्रसिद्ध आत्मा हो जायेगा और उसके होनेमात्र से जो होना चाहिए वह होने लगेगा, जो नहीं होना चाहिए उसको वह तुरंत रोक सकता है ।

मनुष्यैः क्रियते यत्तु तन्न शक्यं सुरासुरैः ।

(ब्रह्म पुराण : २७.७०)

मनुष्य इन पाँच महाव्रतों के आधार पर जो कर सकता है वह देवता भी नहीं कर सकते हैं और दैत्य भी नहीं कर सकते हैं ।

और एक केवल ब्रह्मचर्य-व्रत पाले तो भी चार वेद पढ़ने का जो फल होता है या तप करनेवाले को जो फल होता है, वीर्य की रक्षा करनेवाला उस फल से स्वतः सम्पन्न हो जाता है । ❐

ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी

निम्न प्रश्नों के उत्तर हेतु यह अंक ध्यान से पढ़ें ।

(१) तुममें मिलना और छूटना नहीं है क्योंकि तुम .... हो ।

(२) आत्मा तो स्थूल, सूक्ष्म, कारण - तीनों देहों का .... है ।

(३) ...... को दूर करना और .... को प्राप्त करना यही ब्रह्मविद्या का लक्ष्य है ।

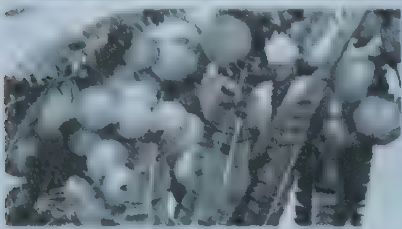
(४) जो भी चेष्टा करें, जो भी कर्म करें वे योग के .... होने चाहिए, न कि योग को .... ।

(५) वास्तव में तो सब कुछ करनेवाले ..... ही हैं । (उत्तर अगले अंक में)

→ हुए, संस्कृति रक्षा यात्राएँ निकाली गयीं तथा जगह-जगह 'संस्कृति रक्षा संकल्प कार्यक्रमों' का आयोजन किया गया ।

'पूज्य बापूजी को न्याय मिले' तथा अन्य समाजहितकारी विषयों को लेकर 'अखिल भारतीय नारी रक्षा मंच' ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ को ज्ञापन सौंपा । और भी कई महिला संगठनों ने महिला उत्थान मंडल की आवाज में अपनी आवाज मिलाकर पूज्य बापूजी की रिहाई की माँग की आवाज को बुलंद किया ।

पूज्य बापूजी के सत्संग-मार्गदर्शन से देश-विदेश की लाखों-लाखों महिलाओं का जीवन उन्नत हुआ है । अनेक महिलाओं ने पूज्यश्री की निर्दोषता और महानता का बयान करते हुए अपने विडियो यूट्यूब, वॉट्सएप आदि विभिन्न माध्यमों द्वारा साझा किये । पूज्य बापूजी के नारी-उत्थान के कार्यों को दर्शाता 'Women Welfare Activities' विषय ट्विटर पर शीर्ष ट्रेंड्स में दिखा । पूज्यश्री की ससम्मान रिहाई के लिए उनके अतुलनीय समाजोत्थान के कार्यों व उनके उज्ज्वल महान चरित्र पर प्रकाश डालते हुए कनाडा, यू.के., यू.एस.ए. आदि स्थानों से भी संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) को पत्र भेजे गये । इस प्रकार विश्व महिला दिवस पर **'निर्दोष बापूजी को रिहा करो !'** की आवाज देश-विदेश में गूँज उठी । ❐



बिगड़ी हुई जीवनशैली की समस्याओं में लाभदायी : आँवला



पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है कि ''आँवले का बड़ा भारी महत्त्व है। आँवला सर्वश्रेष्ठ रसायन (tonic) है। इसके सेवन से शक्ति, स्फूर्ति और शीतलता का संचार होता है। यह शरीर को पुष्ट बनाता है, नेत्रज्योति बढ़ाता है। पित्त-प्रकोप से होनेवाली आँखों की जलन, पेशाब में जलन, बवासीर आदि को यह दूर करता है। गर्मियों (ग्रीष्म ऋतु : १९ अप्रैल से २० जून) में तो यह वरदानस्वरूप है।'' पूज्य बापूजी ने आँवले की उपयोगिता के साथ-साथ इसके वृक्षों को लगाने का भी प्रचार-प्रसार व्यापक स्तर पर करके समाज को लाभान्वित किया है।



वर्तमान समय में पेट की उष्णता एक बड़ी समस्या बन गयी है। ग्रीन हाउस गैसों के कारण वातावरण गर्मीवर्धक हो गया है। इससे तथा रात्रि-जागरण व मोबाइल, कम्प्यूटर, टी.वी. आदि के बढ़ते उपयोग से भी लोगों के शरीर में आंतरिक गर्मी बढ़ रही है। फास्ट फूड, चाय-कॉफी व अधिक मिर्च-मसालेदार भोजन का सेवन तथा असमय खाने से पाचन-संबंधी समस्याएँ होती हैं एवं शारीरिक गर्मी बढ़ती है। इस बिगड़ी हुई जीवनशैली का एक गम्भीर दुष्परिणाम है - पुरुषों में शुक्र धातु दौर्बल्य व स्वप्नदोष एवं महिलाओं में पानी पड़ने की बीमारी (श्वेत प्रदर)।

पुरुषों व महिलाओं की इन गम्भीर समस्याओं में आँवले का सेवन अत्यंत लाभदायी है। आँवला चूर्ण में मिश्री मिलाकर लें। इसका सेवन बढ़ी हुई उष्णता को मल के साथ बाहर निकालता है। यह गर्मी के दिनों में अत्यंत लाभदायी है। शीतल व वीर्यपोषक गुण से यह वीर्य को पुष्ट करके शीतलता, ताजगी, स्फूर्ति व बल प्रदान करता है तथा महिलाओं की पानी पड़ने की बीमारी में भी लाभदायी है।

ताजे आँवलों से बना 'च्यवनप्राश' भी शक्ति, स्फूर्ति, ताजगी तथा रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ाने हेतु श्रेष्ठ औषधि है। **च्यवनप्राश व मिश्रीयुक्त 'आँवला चूर्ण' के साथ ही आँवला रस, आँवला कैंडी, आँवला अचार, आँवला पाउडर आदि आँवले से बने उत्पाद संत श्री आशारामजी आश्रमों में व समितियों के सेवाकेन्द्रों से प्राप्त हो सकते हैं। इनका उपयोग करके आँवले के विभिन्न गुणों का लाभ ले सकते हैं।**

सावधानी : रविवार को आँवले का सेवन वर्जित है, शुक्रवार को कम लें। ❐

घमौरियाँ हों तो - पूज्य बापूजी

✻ नीम के १० ग्राम फूल व थोड़ी मिश्री पीसकर पानी में मिला के खाली पेट पी लें। इससे घमौरियाँ शीघ्र गायब हो जायेंगी।

✻ नारियल तेल में नींबू-रस मिलाकर लगाने से घमौरियाँ गायब हो जाती हैं।

✻ मुलतानी मिट्टी★ लगा के कुछ मिनट बाद स्नान करने से गर्मी और घमौरियों का शमन होता है।

★ आश्रम में व समितियों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध

॥ जिसकी दुर्गति होनेवाली है वह विपरीत खुराक खाता है। ॥

क्या करें (√) ग्रीष्म ऋतु में क्या न करें (×)

१९ अप्रैल से २० जून

क्या करें (√)

(१) ग्रीष्म ऋतु में मधुर रस-प्रधान, शीतल, द्रवरूप (शरबत, पना आदि तरल पदार्थ) और स्निग्ध (घी, तेल आदि से युक्त) अन्न-पानों का सेवन करना चाहिए।

(चरक संहिता)

(२) पुराने चावल, मूँग दाल, परवल, लौकी, पेठा, पका हुआ लाल कुम्हड़ा, तोरई, बथुआ, चौलाई, अनार, तरबूज, खरबूजा, मीठे अंगूर, किशमिश, ककड़ी, आम, संतरा, नारियल-पानी, नींबू, सत्तू, हरा धनिया, मिश्री, देशी गाय का दूध, घी आदि पदार्थों का सेवन हितकारी है।

(३) सादा अथवा मटके का पानी स्वास्थ्यप्रद है। थोड़ी-सी देशी खस (गाँडर घास) अथवा चंदन की लकड़ी का टुकड़ा मटके में डाल दें। इसका पानी पीने से बार-बार लगनेवाली प्यास व गर्मी कम होती है।

(४) ब्राह्ममुहूर्त में उठकर शीतल हवा में घूमना, सूती व सफेद या हलके रंग के वस्त्र पहनना, चाँदनी में खुली हवा में सोना हितकारी है।

(५) जलन होती हो तो रोज खाली पेट गोदुग्ध में २ चम्मच देशी गोघृत मिलाकर पीना चाहिए। शहद★ खाकर ऊपर से पानी पीने से भी जलन कम होती है।



(६) ठंडे पानी में जौ अथवा चने का सत्तू मिश्री व घी मिलाकर पियें। इससे सम्पूर्ण ग्रीष्मकाल में शक्ति बनी रहेगी।

★ आश्रम में व समितियों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध

क्या न करें (×)

(१) गरिष्ठ या देर से पचनेवाले, बासी, खट्टे, तले हुए, मिर्च-मसालेवाले तथा उष्ण प्रकृति के पदार्थ, बर्फ या बर्फ से बनी चीजें, उड़द की दाल, लहसुन, खट्टा दही, बैंगन आदि के सेवन में परहेज रखें।

(२) दूध और फलों के संयोग से बना मिल्कशेक, कोल्ड ड्रिंक्स, फ्रिज में रखी तथा बेकरी की वस्तुओं आदि का सेवन न करें। गन्ने के रस में बर्फ या नमक डाल के नहीं पीना चाहिए। (धातु से बनी घानियों से निकाला हुआ गन्ने का रस पित्त और रक्त को दूषित करनेवाला होता है। अतः गन्ने का रस पीने की अपेक्षा गन्ना चूसकर खाना अधिक लाभकारी होता है।)

(३) अधिक व्यायाम, अधिक परिश्रम एवं मैथुन त्याज्य हैं।

(४) ए.सी. या कूलर की हवा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

(५) एकदम ठंडे वातावरण से निकलकर धूप में न जायें। धूप से आकर एकदम पानी न पियें। थोड़ा रुक के पसीना सूख जाने के बाद और शरीर का तापमान सामान्य होने पर ही जल आदि पीना चाहिए।

(६) घमौरियों के लिए पाउडर का उपयोग नहीं करना चाहिए। इससे रोमकूप बंद हो जाते हैं और पसीना नहीं निकल पाता। पसीना नहीं निकलने से चर्मरोग होने की सम्भावना बढ़ जाती है। **(घमौरियों में लाभकारी प्रयोग पढ़ें पृष्ठ ३० पर।)**

जो 'ब्रह्मचारी' (ब्रह्म में विचरण करने का अभ्यासी) रहता है, वह आनंदित रहता है, निर्भीक रहता है, सत्यप्रिय होता है। - पूज्य बापूजी

विश्वपटल पर हर वर्ग के लोगों के हृदय में स्थान बनानेवाला पर्व

संस्था समाचार

आनंद के महासागर सनातन धर्म में पर्वों-उत्सवों के रूप में आनंद की तरंगें उछल-उछलकर आती हैं और हमारी रसमयता-मधुमयता प्रकट कर हमें उल्लसित कर यह बता जाती हैं कि 'ओ आनंदस्वरूप ! देख अपना ही आनंद ! तू आनंद-कणिका नहीं, स्वयं परिपूर्ण आनंद है !' जिस संस्कृति में हर बहाने अपना ही आनंद उभारने हेतु पवित्र पर्वों की व्यवस्था है वह क्यों उत्सव के नाम पर मलिन और पराश्रित सुख का आभास देनेवाली वेलेंटाइन डे जैसी विकृत परम्पराओं को स्वीकृत करे ?

फिर भी एक छुपी कूटनीति के तहत विदेशों के बाद अब भारत में भी यह विकृत परम्परा फैलायी जा रही थी । सूक्ष्म एवं दूरदृष्टि पूर्वक इसे पहचानकर निरस्त करते हुए समस्त विश्ववासियों के मंगल हेतु १५ वर्ष पूर्व ब्रह्मवेत्ता संत श्री आशारामजी बापू ने १४ फरवरी को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' के रूप में मनाने की पावन परम्परा आरम्भ की थी, जिसकी महत्ता स्वीकार कर अब विश्वपटल पर हर मत, पंथ, धर्म के अनुयायी हृदयपूर्वक इस पर्व को अपनाने लगे हैं ।

देश-विदेश के संत श्री आशारामजी आश्रमों तथा आश्रम की समितियों, बाल संस्कार केन्द्रों, महिला उत्थान मंडलों, युवा सेवा संघों द्वारा अपने-आपमें अनूठा यह पर्व अपने-अपने स्थान में तथा सोसायटियों, वृद्धाश्रमों एवं झुग्गी-झोंपड़ियों आदि में कोरोना से बचाव के नियमों का पालन करते हुए मनाया गया ।

विदेशों में भी यह उत्सव बड़े उत्साह से मनाया गया । अपने-अपने घरों में व सामूहिक आयोजनों में कहीं प्रत्यक्ष तो कहीं ऑनलाइन Google meet, Zoom App आदि के द्वारा समाज के विभिन्न वर्ग के लोगों ने इस उत्सव को मनाया। ट्वीटर पर '#१४फरवरी_मातृपितृ_पूजन_दिवस', 'Sant Shri Asharamji Bapu', 'Parents Worship Day' बहुचर्चित होने से टॉप ट्रेंड्स में दिखे। फेसबुक पर मातृ-पितृ पूजन दिवस की पोस्ट को १७ लाख से अधिक लोगों ने देखा । 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' को अब राष्ट्रीय पर्व घोषित करने की माँग भी उठ रही है । इस हेतु कई स्थानों पर राष्ट्रपति व राज्यपाल के नाम ज्ञापन सौंपे गये ।

पूज्य बापूजी के महासंकल्प से भिन्न-भिन्न देश, धर्म, सभ्यताओं, पीढ़ियों के विविध पुष्प सात्त्विक प्रेम के सूत्र में गुँथकर विराट पुरुष का कंठ-हार हो शोभायमान हो गये । धन्य-धन्य है भारत देश और सर्वश्रेष्ठ है यह सनातन धर्म व संस्कृति जिसमें पूज्य बापूजी जैसे ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों का अवतरण होता रहा है, जो रसातल की ओर जा रहे समाज को ऐसे पर्वों के सर्जन से, अपने संकल्प व मार्गदर्शन से थाम लेते हैं और उसका उत्थान करते हैं । ❒

शास्त्र, ब्रह्मवेत्ता संत और आप्तजन जो कहते हैं उसके अनुसार मन के स्फुरणों की चेष्टा करें और बाकी के स्फुरणों को रोक दें तो स्फुरण निष्फुर पद में पहुँचने में बड़ा मदद करेगा ।

- पूज्य बापूजी

सुखमय जीवन की अनमोल कुंजियाँ

अक्षय तृतीया को पीपल-परिक्रमा का फल

जो व्यक्ति अक्षय तृतीया (१४ मई २०२१) क दिन प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर पीपल को जल अर्पित करके उसकी १०८ परिक्रमाएँ करता है वह एक वर्ष तक अनेक अनिष्टों से क्षित रहता है, उसकी संतानें सुखी होती हैं, सके कार्य निर्बाध गति से होते हैं तथा उसे धन वं आरोग्य की प्राप्ति होती है ।

भय दूर करने हेतु - पूज्य बापूजी

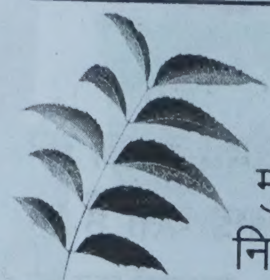
आनंद रामायण में आता है कि सोते समय 1 प्रातः अथवा यात्रा के आरम्भ के समय कोई यभीत व्यक्ति हनुमानजी के ये १२ नाम लेता तो उसका भय दूर हो जाता है ।

(१) हनुमान (२) अंजनीसुत (अंजनीपुत्र) ३) वायुपुत्र (४) महाबली (५) रामेष्ट अर्थात् मजी के प्रिय (६) फाल्गुनसख (अर्जुन के मित्र) ७) पिंगाक्ष (भूरे नेत्रवाले) (८) अमितविक्रम अनंत बलशाली) (९) उदधिक्रमण (समुद्र ाँघनेवाले) (१०) सीताशोकविनाशन ११) लक्ष्मणप्राणदाता (१२) दशग्रीवदर्पहा र्थात् रावण के घमंड को दूर करनेवाले ।

ासनाओं की विदाई और प्रभु की प्राप्ति !

वासना ने रावण को कहीं का नहीं रखा ौर निर्वासनिक शबरी, राजा जनक आदि ने र्णता पा ली । निर्वासनिक होने के लिए श्वास दर जाय तो प्रभु का नाम, बाहर आये तो नती । मूलबंध करके इस प्रकार श्वासोच्छ्वास गिनती करो तो वासनाओं की विदाई और ु की प्राप्ति ! - पूज्य बापूजी

सर्वरोगहारी निम्ब (नीम) सप्तमी



(निम्ब सप्तमी : १९ मई)

भविष्य पुराण के ब्राह्म पर्व में मुनि सुमंतुजी राजा शतानीक को निम्ब सप्तमी (वैशाख शुक्ल सप्तमी) की महिमा बताते हुए कहते हैं : ''इस दिन निम्ब-पत्र का सेवन किया जाता है । यह सप्तमी सभी तरह से व्याधियों को हरनेवाली है । इस दिन भगवान सूर्य का ध्यान कर उनकी पूजा करनी चाहिए । सूर्यदेव की प्रसन्नता के लिए नैवेद्य के रूप में गुड़ोदक (गुड़-मिश्रित जल) समर्पित करे फिर निम्न मंत्र द्वारा निम्ब की प्रार्थना करे व भगवान सूर्य को निवेदित करके १०-१५ कोमल पत्ते प्राशन (ग्रहण) करे :

त्वं निम्ब कटुकात्मासि आदित्यनिलयस्तथा ।
सर्वरोगहरः शान्तो भव मे प्राशनं सदा ॥

'हे निम्ब ! तुम भगवान सूर्य के आश्रय स्थान हो । तुम कटु स्वभाववाले हो । तुम्हारे भक्षण करने से मेरे सभी रोग सदा के लिए नष्ट हो जायें और तुम मेरे लिए शांतस्वरूप हो जाओ ।'

इस मंत्र से निम्ब का प्राशन करके भगवान सूर्य के समक्ष पृथ्वी पर आसन बिछाकर बैठ के सूर्यमंत्र का जप करे । भगवान सूर्य का मूल मंत्र है : **'ॐ खखोल्काय नमः ।'** सूर्य का गायत्री मंत्र है : **'ॐ आदित्याय विद्महे विश्वभागाय धीमहि । तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ।'**

इसके बाद मौन रहकर बिना नमक का मधुर भोजन करे ।'' ❐

करोड़ों-अरबों रुपये लुटाने पर भी जो चीज नहीं मिलती है वह साधन-भजन से प्रकट होती है । - पूज्य बापूजी

परिप्रश्नेन...

साधिका : जब मैं रात को सोती हूँ तब मेरे को अजीब-अजीब-सी चीजें दिखाई देती हैं तो मैं मंत्रजप करती हूँ, जिससे विघ्न-बाधाएँ दूर हो जाती हैं । मैं अपनी पूजा पूरी नहीं कर पाती, किसी-न-किसी कारण से अधूरी छूट जाती है । ऐसा क्यों होता है, मुझे समझ में नहीं आता है ।

पूज्य बापूजी : जो श्वासोच्छ्वासवाली साधना बतायी है, वह रात को सोते समय करो और सुबह ॐकार का जप और विश्रांति... । 'ऐसा क्यों होता है ? कैसे न हो ?' इस पचड़े में पड़ो नहीं । हम भगवान के, भगवान हमारे और जन्म-जन्मांतर के जो संस्कार हैं स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर में, उनमें उथल-पुथल होती है। 'सड़क पर ऐसा यातायात क्यों आता है, ऐसा गड्ढा क्यों है, ऐसी चढ़ाई या ढलान क्यों है ?...' इसमें उलझो मत । इसीका नाम तो सड़क है बेटे ! ऐसे ही इसीका नाम तो साधना में उतार-चढ़ाव की अनुभूतियाँ हैं लेकिन 'उन सबको देखनेवाला जो है वही सत्-चित्-आनंदस्वरूप मेरा आत्मदेव है। ॐ... **हम हैं अपने-आप, हर अनुभव के बाप !** अनुभव आते-जाते हैं किंतु उनको जाननेवाला मेरा नित्य सत्-चित्-आनंदस्वभाव है... ॐ शांति, ॐ आनंद ।' ऐसा चिंतन करो ।

साधक : बापूजी ! लगभग एक महीने से जब मैं ध्यान लगाता हूँ तब ध्यान में मेरे सामने एक रोशनी आती है जो करीब २-३ मिनट तक रहती है। उसको देखकर मैं सोचता हूँ कि यह मेरे सामने से न जाय तो फिर धीरे-धीरे वह चली जाती है । तो यह क्या होता है, क्यों होता है, कैसे होता है मुझे नहीं पता ।

पूज्यश्री : यह रोशनी है न, वह क्या है ? **देशबन्धश्चित्तस्य धारणा ॥ (पातंजल योगदर्शन विभूतिपाद : १)** जब हमारी वृत्ति एक जगह पर टिक जाती है तो धारणा की सिद्धि होती है उसीसे ये दृश्य दिखते हैं । काले दृश्य दिखे तो तमस गुण की प्रधानता है । लाल-पीले, रंग-बिरंगे दिखे तो रजस गुण की प्रधानता है । श्वेत प्रकाश दिखता है तो सत्त्वगुण की प्रधानता है । यह दिखता रहे इस पकड़ में पड़ो नहीं या अपने को न दिखे इस जकड़ में जकड़ो नहीं । **दिख-दिखकर चला जाता है लेकिन उसके बाद भी जो रहता है वह कौन है ? 'वह मैं आत्मरूप हूँ ।' उस अपने 'मैं' को खोजो जो देखनेवाला है । बदलनेवाला सब प्रकृति है और प्रकृति की बदलाहट को देखनेवाला जो है वह मेरा परमात्मा आत्मदेव है ।** फिर अब तो 'श्री योगवासिष्ठ महारामायण', 'ईश्वर की ओर', 'जीवन विकास' सत्साहित्य★ को पढ़कर विचारो, विश्रांति पाओ, परमात्मसुख की अनुभूति करो ।

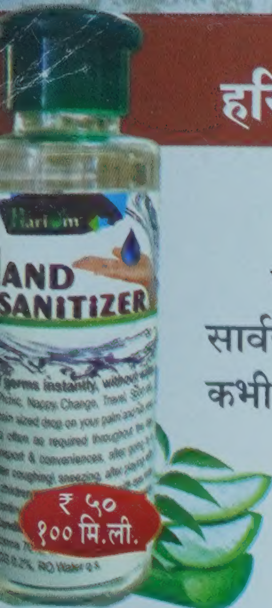
★ आश्रम में व समितियों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध

अमृतबिंदु

- पूज्य बापूजी

✻ एक परमात्मा ही है कि जिसको एक बार मिलो तो फिर बिछुड़ना नहीं होता ।

✻ जीवात्मा परमात्मा की गोद... जाता है तो परमात्मा का सामर्थ्य, माधुर्य, आनंद उसी समय होम डिलीवरी, हृदय डिलीवरी हो जाते हैं



हरि ॐ हैंड सैनिटाइजर

घृतकुमारी (Aloe vera) व नीम युक्त

९९.९ % कीटाणुओं को तुरंत नष्ट करने में सक्षम !

बाजार, अस्पताल, ऑफिस, कार में हों या हों यातायात में... खेलकूद, खाँसने-छींकने अथवा सार्वजनिक स्थानों से आने के बाद... बीमार व्यक्ति या पालतू पशुओं को छूने के बाद... अर्थात् कहीं भी, कभी भी... साबुन और पानी की अनुपलब्धता में भी रखें हाथों को कीटाणुमुक्त ।

गुलाब महक

(गुलाबजल)

यह शीतलताप्रदायक, प्राकृतिक सौंदर्यप्रद शरीर के रंग को निखारनेवाला है । मुँहासों, चा के लाल चकत्तों, आँखों के नीचे के काले रों तथा गर्मी के कारण होनेवाली फुंसियों को र करने में सहायक है ।





एलोवेरा जेल

यह त्वचा को कोमल बनाता है और उसमें निखार लाता है । त्वचा की कील-मुँहासे, काले दाग-धब्बे व झुर्रियों से रक्षा करता है । यह रूखी व तैलीय त्वचा दोनों के लिए हितकारी है । त्वचा को हानिकारक किरणों व प्रदूषण से बचाता है ।



सदाबहार तेल

यह बालों का झड़ना, असमय सफेद होना, गंजापन, रूसी आदि समस्याओं में लाभकारी है । यह बालों को काला, चमकदार तथा घना बनाने में सहायक है ।

शंखपुष्पी सिरप

स्मृति व दिमागी शक्ति वर्धक रसायन

स्मरणशक्ति बढ़ाने हेतु यह एक दिव्य औषधि है । साथ ही यह मानसिक तनाव, थकावट अनुभव करना, सहनशक्ति का अभाव, चिड़चिड़ापन, निद्राल्पता, मन की अशांति, चक्कर आना तथा उच्च रक्तचाप (hypertension) आदि रोगों में भी लाभप्रद है ।





रसायन चूर्ण

यह शक्ति, स्फूर्ति, ताजगी तथा दीर्घ जीवन देनेवाला है । जीर्णज्वर, वीर्यदोष, मूत्रसंबंधी रोग, स्वप्नदोष आदि में लाभदायी है । यह बढ़ती उम्र के साथ आनेवाली कमजोरी एवं रोगों से रक्षा करता है । रोगी-निरोगी सभी इसे ले सकते हैं । निरोगता व दीर्घ आयुष्य हेतु ४० वर्ष की उम्र के बाद इसका सेवन विशेषरूप से करना चाहिए ।

चिरयौवन, दीर्घायुष्य प्रदायक व मातृ-दुग्धवर्धक

शतावरी चूर्ण



यह बल, वीर्य व बुद्धि वर्धक, चिरयौवन व दीर्घायुष्य देनेवाली, वजन बढ़ाने में मददरूप, नेत्र एवं य के लिए हितकर तथा रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ानेवाली श्रेष्ठ औषधि है । इसका नियमित सेवन ान्य कमजोरी, दुर्बलता, वीर्य-संबंधी बीमारियों, अत्यधिक मासिक स्राव, वंध्यत्व आदि रोगों ाभदायी है । इसके सेवन से प्रसूति के बाद दूध खुलकर आता है ।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में व समितियों के सेवाकेन्द्रों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व सभीके विस्तृत लाभ आदि की जानकारी के लिए गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : w.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७३०, ९२१८११२२३३. ई-मेल : contact@ashramestore.com

बड़भागी हैं दुःखहारि श्रीहरि के प्रसाद से ओतप्रोत 'ऋषि प्रसाद' के सदस्य बनने व बनानेवाले

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 3
Licence to Post without Pre-p
WPP No. 08/21-23
(Issued by CPMG UK. valid upto 3
Posting at Dehradun G.P.O.
1st to 17th of every mon
Date of Publication: 1st Ap





स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।